विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल की मास्टर ऑफ एजुकेशन (आर.आई.ई.)

उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु

लघु शोध-प्रबंध

सत्र 2013-14

मार्गदर्शक

डॉ. कौशल किशोर खरे
प्राध्यापक, शिक्षा विभाग,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोधार्थी

राजकुमार
एम.एड.(आर.आई.ई.)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

D-422

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान Regional Institute of Education Library

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली)
श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

घोषणा–पत्र

मैं **राजकुमार** घोषणा करता हूं कि एम.एड़ (आर.आई.ई.) उपाधि की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत यह लघु शोध प्रबंध **''विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन''** नामक शीर्षक पर लघु शोध प्रबंध संस्थान, भोपाल के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है।

यह लघु शोध प्रबंध मेरे द्वारा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. सत्र 2013–2014 की उपाधि की आंशिक सम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस शोध में लिये गये प्रदत्तों एवं सूचनाओं को विश्वसनीय तथा मूल स्थानों से प्राप्त किया गया है तथा ये प्रयास पूर्णतः मौलिक है।

स्थान – भोपाल,

दिनांक – 19.05.2014

शोधार्थी

Rajkumar

राजकुमार

एम.एड.आर.आई.ई.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,

भोपाल

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **राजकुमार,** क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल से शिक्षा शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **"विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"** हमारे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है यह शोध कार्य इनकी निष्ठा, लगन एवं ईमानदारी से किया गया मौलिक कार्य का परिश्रम का परिणाम है, जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

हम आशीर्वाद सहित प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की एम.एड. (आर.आई.ई.) उपाधि हेतु सत्र 2013–14 की आंशिक सम्पूर्ति हेतु स्वीकृति प्रदान करते हैं।

स्थान – क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
दिनांक 19.05.2014

19.05.2014

मार्गदर्शक
डॉ. कौशल किशोर खरे
प्राध्यापक
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल (म.प्र.)

आभार-ज्ञापन

इस शोध कार्य की सम्पन्नता में मेरे शोध कार्य के मार्गदर्शक आदरणीय **डॉ. कौशल किशोर खरे**, प्राध्यापक शिक्षा विभाग का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अत्याधिक व्यस्तता के बावजूद भी अपने सोहार्दपूर्ण व्यवहार के द्वारा मेरी कठिनाइयों का निराकरण किया एवं मुझे प्रगति की ओर अग्रसर करते रहे। यह लघु शोध आपके मार्गदर्शन का प्रतिफल है। आपके द्वारा धैर्यपूवर्क प्रदत्त आत्मीयता, वात्सल्यपूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन अविस्मरणीय रहेगा। मैं उनका ऋणी हूँ।

मैं आदरणीय प्राचार्य **डॉ. एच.के.सेनापति** का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-2 पर अभिप्रेरित क़िया। मैं अधिष्ठाता **डॉ. रीटा शर्मा** का आभारी हूँ। पूर्व विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग **डॉ. बी.रमेश बाबू** के स्नेहपूर्ण व्यवहार आशीर्वाद हेतु हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे समय-समय पर उचित मार्गदर्शन करके मेरे शोध कार्य में सहयोग प्रदान किया।

मैं **डॉ. किरण माथुर, डॉ. रत्नमाला आर्या, श्री आनन्द वाल्मीकि, डॉ. श्न.सी. ओझा, संजय पंडागले,** एवं **समस्त गुरूजनों** का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर उचित मार्गदर्शन करके मेरे शोधकार्य में सहयोग दिया में पुस्तकालय अध्यक्ष **श्री पी.के.त्रिपाठी** एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों का हृदय से आभारी हूँ। मैं अपने **सभी मित्रगणों** का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर शोध कार्य में आई समस्याओं के निवारण में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

मैं कृतज्ञ हूँ मेरे माता-पिताजी एवं भाई व घर के तथा परिवार के सभी सदस्यों का जिनकी शुभकामनाओं से कार्य में गति मिली।

उसके साथ-साथ जिस विद्यालय से मैंने ऑकड़े संकलित किये वहां से सभी प्राचार्यो एवं शिक्षणगण एवं मेरे सभी साथी सहपाठियों का भी दिल से आभारी हूँ जिनका इस शोध कार्य में मुझे अपार सहयोग मिला।

स्थान- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

दिनांक- 19.05.2014

शोधार्थी

Rajkumar

राजकुमार

एम.एड. (आर.आई.ई.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

अनुक्रमणिका

विषय-वस्तु	पृष्ठक्रमांक
घोषणा-पत्र	I
प्रमाण-पत्र	II
आभार-ज्ञापन	III
अध्याय प्रथम - शोध परिचय	**1-29**
1.1 प्रस्तावना	
1.2 शिक्षा एवं उसके स्तर	
1.3 उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा तथा महत्व	
1.4 उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका	
1.5 विद्यालयीन शिक्षा में शिक्षक की भूमिका	
1.6 विद्यालयीन शिक्षा तथा अभिभावक	
1.7 विद्यालयीन शिक्षा तथा समाज	
1.8 अध्यापक एवं उनकी पृष्ठभूमि का शिक्षण अधिगम पर प्रभाव	
1.9 मूल्य क्या है?	
1.10 शिक्षण अध्यापन के दौरान बालकों में मूल्यों का विकास	
1.11 मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले कारक	
1.12 शैक्षिक मूल्य का महत्व व आवश्यकताएँ	
1.13 मूल्यों की शिक्षा के विभिन्न आयोगों व समितियों के शिक्षा एवं शैक्षिक मूल्यों पर विचार	
1.14 शैक्षिक मूल्यों के प्रति शिक्षक की भूमिका	
1.15 अध्ययन की आवश्यकता	
1.16 समस्या कथन	
1.17 शोध कार्य में प्रयुक्त चर	
1.18 समस्या का सीमांकन	

1.19 शोध कार्य के उद्देश्य

1.20 शोध कार्य की परिकल्पनाएँ

अध्याय द्वितीय - संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन 30-36

2.1 प्रस्तावना

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ

2.3 संबंधित शोधकार्यो का पुनरावलोकन

अध्याय तृतीय - शोध विधि तथा प्रक्रिया 37-41

3.1 प्रस्तावना

3.2 न्यादर्श एवं उसका चयन

3.3 शोध कार्य में प्रयुक्त चर

3.4 शोध अभिकल्प

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरण

3.6 प्रदत्तों का संग्रहण

3.7 ऑकड़ों का विश्लेषण एवं सांख्यिकीय विधियॉ

अध्याय चतुर्थ - प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या 42-64

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.3 परिणामों की विवेचना

अध्याय पंचम - शोध निष्कर्ष एवं सुझाव 65-73

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या कथन

5.3 शोध कार्य के उद्देश्य

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

5.4 शोध कार्य की परिकल्पनाएँ

5.5 शोध में प्रयुक्त चर

5.6 शोध का परिसीमन

5.7 न्यादर्श का चयन

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण

5.9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

5.10 प्रदत्तों का विश्लेषण

5.11 शोध परिणाम

5.12 निष्कर्ष

5.13 भावी शोध हेतु सुझाव

संदर्भग्रंथ

परिशिष्ट

प्रथम–अध्याय

शोध परिचय

प्रथम–अध्याय

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना –

शिक्षा राष्ट्र एवं व्यक्ति की प्रगति का मूल आधार है। शिक्षा का जीवन के प्रत्येक पक्ष में परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से गहन सम्बन्ध है। व्यक्ति के जीवन के सभी पक्ष–शारीरिक मानसिक भौतिक, चारित्रिक, नैतिक, व्यवहारिक, अध्यात्मिक धार्मिक, शैक्षिक, व्यवसायिक राजनीति तथा सामाजिक आदि शिक्षा से जुड़े रहते है इससे वे प्रभावित होते है। व सभी को प्रभावित करते है।

इस प्रकार समाज के विभिन्न वर्ग–दुकानदार नौकरी करने वाले, पेशेवर लोग, छात्र, अभिभावक आदि सभी शिक्षा से सम्बन्धित है तथा शिक्षा को वे अपने दृष्टिकोण से देखते है।

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों से मानी जाती है, एक है शिक्ष् धातु तथा दूसरी शाक्ष धातु है शिस् का अर्थ है सीखना अथवा ज्ञान प्राप्त करना या अध्ययन करना। शास का अर्थ है अनुशासन में रखना 'नियंत्रण' में रखना तथा निर्देश देना।

शिक्षा के अनुरूप अथवा समान अर्थ वाला एक और शब्द है ''विद्या' जो संस्कृत के विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना अथवा ज्ञान प्राप्त करना।

पश्चिमी भाषा के संदर्भ में शिक्षा को अंग्रेजी में एजूकेशन कहते है विद्वानों के अनुसार इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के निम्न शब्दों से हुई है जो इस प्रकार है –

(1) Educare –ऐडुकेयर–संवर्धन करना, पालन पोषण करना।

(2). Educare –ऐडुकीयर–विकसित करना, बाहर लाना।

(3). Educatus –ऐडुकेट्स–पढ़ाना, प्रशिक्षित करना।

(4). Educo –ऐडुको–अंदर से निकालना अंदर का विकास करना आगे बढ़ाना।

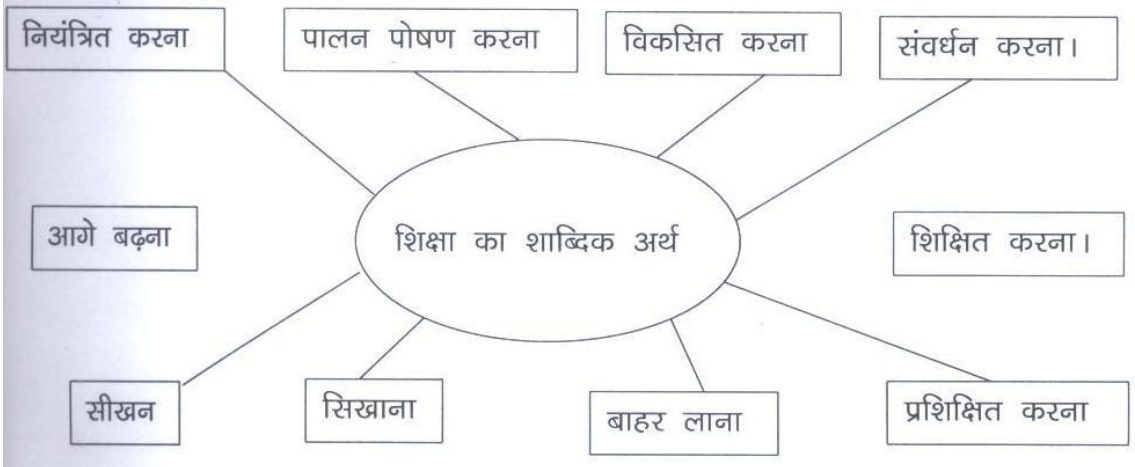

शिक्षा के अर्थ के बारे में कुछ विद्वानों के विचार इस प्रकार है

- सुकरात – शिक्षा का अर्थ है प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में अदृश्य रूप से विद्यमान संसार के सर्वमान्य विचारों को प्रकाश में लाना है।
- एडीसन – शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव के अंतर में निहित सभी शक्तियों तथा गुणों का विकास करना है।
- गाँधी जी – शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर मन, आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को व्यक्त करना है अथवा बाहर निकालना है।
- फ्रोबेल – शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियाँ प्रकट होती है।
- काण्ट – शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णतः का विकास है, जिसकी उसमें क्षमता है।

इस प्रकार शिक्षा से संबंधित और भी अन्य विद्वानों ने अनेक विचार प्रकट किये है। विद्यार्थियों में जन्म जात शक्ति के विकास के रूप में पाठ्यात्तर क्रियाओं का भी सहारा लिया जाता है जो कि शिक्षक का कार्य होता है कि छात्रों में विभिन्न प्रकार की क्षमता विकसित की जाये। इस प्रकार एडम्स ने

शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना शिक्षक और छात्र। जॉन डीवी ने शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया माना है। (1) शिक्षक (2) पाठ्यक्रम (3) छात्र

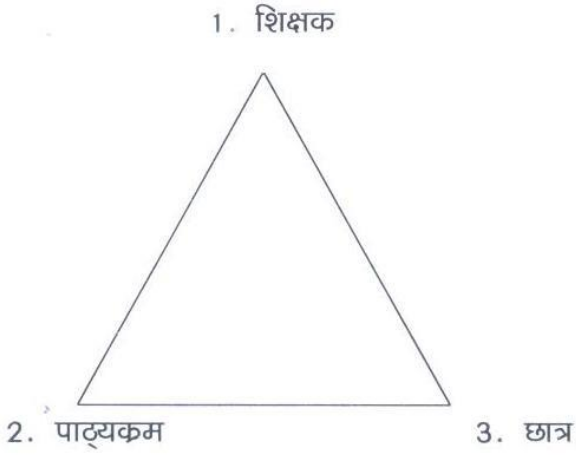

चित्र क्रमांक–1

चित्र क्रमांक–1को देखने पर स्पष्ट है कि शिक्षा का सीधा संबंध छात्र, शिक्षक व पाठ्यक्रम से है।

शिक्षा एक पंचमुखी प्रक्रिया है। जिसमें छात्र, शिक्षक व उनकी शिक्षण सामग्री शामिल हैं।

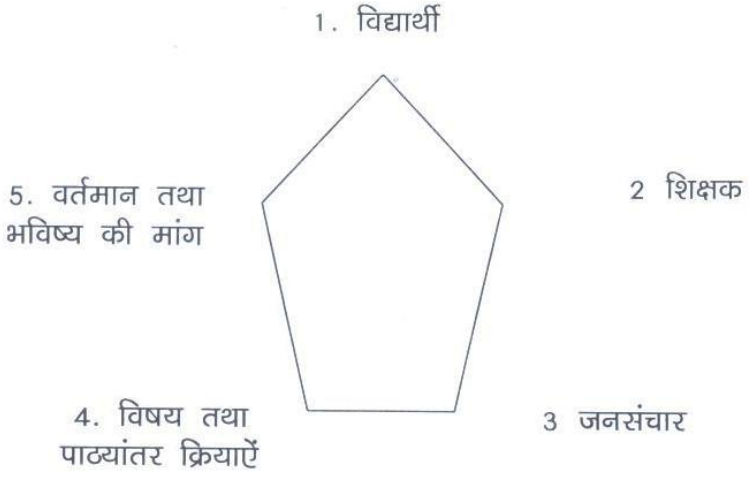

चित्र कमांक–2

1.2 शिक्षा एवं उसके स्तर – शिक्षा व्यक्ति को जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त दी जाती है, इस प्रकार शिक्षा के स्तर निम्नलिखित हैं।

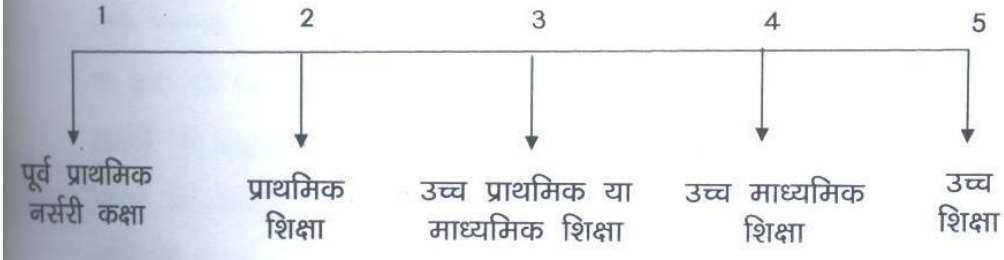

चित्र कमांक–3

- **पूर्व प्राथमिक शिक्षा** – पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत 2 से 6 वर्ष की अवस्था के बच्चे आते है इसमें आँगनबाड़ी, बालबाड़ी, प्रीनर्सरी व नर्सरी और मॉण्टेश्वरी और के.जी. कक्षाऐं शामिल है।

- **प्राथमिक शिक्षा** – प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत 6 वर्ष से 11 वर्ष तक के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। इसमें कक्षा एक से कक्षा पांचवी तक की शिक्षा दी जाती है।
- **उच्च प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा** – उच्च प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत 12 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे आते है कक्षा छठवी से आठवी तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहते है।
- **उच्चतर माध्यमिक शिक्षा** – उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत 15 वर्ष से लेकर 18 वर्ष तक के बच्चे शामिल है इसमें कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक की शिक्षा दी जाती है।
- **उच्च शिक्षा** – उच्च शिक्षा के अंतर्गत वे कक्षाऐं शामिल हैं, जिनमें बी.ए. बी.एस.सी. शामिल है।

1.3 उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा तथा महत्व – कक्षा 6 वीं से कक्षा 8 वीं तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है विकासशील भारत की जनतंत्रीय प्रणाली में उच्च प्राथमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। उच्च प्राथमिक शिक्षा देश की जनशक्ति का स्त्रोत है। उच्च कक्षाओं में प्रवेश करने वाले विद्यार्थी एवं प्राथमिक विद्यालयों हेतु अधिकांश शिक्षक उच्च प्राथमिक शिक्षा के द्वारा ही तैयार किये जाते है।

हुमायूँ के अनुसार, "सामाजिक शिक्षा के किसी भी कार्यक्रम में उच्च प्राथमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उच्च प्राथमिक शिक्षा की सुदृढ़ता पर ही राष्ट्र की शक्ति एवं भविष्य निर्भर करता है। ज्यादातर देशों में उच्च प्राथमिक शिक्षा के बाद ही विभिन्न व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता है। दुर्भाग्यवश शिक्षा की यह कड़ी जितनी महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य है, उतनी ही निर्बल एवं उपेक्षित भी। भारतीय उच्च प्राथमिक शिक्षा का वर्तमान रूप उस ब्रिटिश शिक्षा-व्यवस्था की देन है जिसकी आधारशिला सन् 1854 में वुड के घोषणा पत्र के द्वारा रखी गई थी।

1.4 उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका –

गुरू का स्थान सर्वोपरि है क्योकि गुरू के बिना हमारा पथ प्रदर्शन असम्भव है। गुरू को प्राचीन काल से ही भगवान के तुल्य माना जाता है। कहा जाता है।

गुरू ब्रहमा, गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वरा।
गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

इस प्रकार गुरू को त्रिमूति का दर्जा दिया गया है ब्रहमा जो ज्ञान का भण्डार हैं, विष्णु ज्ञानदाता है और शिव ज्ञान का सदुपयोगकर्ता हैं। इस प्रकार ऐसे गुरू जिनमें भगवान के तीनों रूप देखने को मिलते हैं, ऐसे अध्यापक को बार-बार नमन प्रणाम हैं।

विवेकानन्द जी का कहना है कि जो शिक्षक विद्यार्थियों के स्तर पर उतरकर उनकी आत्मा का परीक्षण करके शिक्षा देता है वही सच्चा शिक्षक है। **जवाहर लाल नेहरू** के अनुसार चार प्रकार के शिक्षक होते हैं। (1). सामान्य शिक्षक, (2) अच्छा शिक्षक (3). उत्तम शिक्षक (4). महान शिक्षक

(1). सामान्य शिक्षक – सामान्य शिक्षक वह है जो केवल कहता है।

(2) अच्छा शिक्षक – अच्छे शिक्षक वह है जो समझाता है।

(3). उत्तम शिक्षक – उत्तम शिक्षक वह है जो प्रदर्शित करता है।

(4). महान शिक्षक – महान शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों को प्रेरणा देता है।

भवन निर्माण में जो स्थान ईटों का है राष्ट्र के निर्माण में वही स्थान या भूमिका शिक्षक की है।

शिक्षा समाज व राष्ट्र के निर्माण का मूल आधार है। शिक्षक पर ही समाज की उन्नति निर्भर होती है। शिक्षक पालकों को समुचित शिक्षा प्रदान कर देश के भविष्य को उज्जवल करता है। शिक्षक का महत्व अगाध है। अवर्णनीय है। भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है।

अतः शिक्षा के उद्देश्य देशकाल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं, जो समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के पूरक होते हैं। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग का चयन करें और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों एवं अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सकें।

शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों ओर शैक्षिक गतिविधियों क्रियाशील रहती है, किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का होता है। शाला की उन्नति एवं विकास के लिये उचित पाठ्यक्रम, श्रेष्ठ पाठ्यपुस्तक उत्तम शिक्षा साधन तथा उपयुक्त शांतागृहों की आवश्यकता तो है परन्तु उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता है उपयुक्त अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की क्योंकि वे ही शिक्षा पद्धति को चलाते हैं। अच्छे शिक्षकों के अभाव में किसी भी देश की शिक्षा पद्धति निर्जीव और निस्तेज हो जाती है। इस तथ्य को समझकर प्राचीन भारत में शिक्षकों का एक विशिष्ट स्थान था लेकिन अंग्रेजों के शासनकाल में शिक्षकों की स्थिति सोचनीय हो गई थी।

इसलिये स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार द्वारा नियुक्त **राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर कमीशन, कोठारी आयोग** आदि ने इस बात पर बल दिया कि अध्यापकों की आर्थिक सामाजिक व व्यवसायिक दशाओं को सुधारे बिना शिक्षक का उत्तरदायित्व अपूर्ण ही रहेगा। देश के सारे शिक्षा शास्त्री विद्वान, राजनीतिज्ञ और प्रशासक यह स्वीकार करते हैं कि देश जिस संकटकालीन दौर से गुजर रहा है उसमें अध्यापक ही उसे सम्बल प्रदान कर सकता है। बालक का सर्वांगीण विकास में शिक्षक को बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। शिक्षक वास्तव में बालक का सर्वांगीण शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास कर सकता हैं विद्यालय प्रांगण में भी शिक्षक को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है, सम्पूर्ण विद्यालय योजनाओं को वही व्यवहारिक रूप देता है। अच्छी से अच्छी शिक्षण पद्धति प्रभाव रहित हो जाती है यदि शिक्षक उसे सही ढंग से प्रयोग न करें जिस प्रकार विद्यालय जीवन में

प्रधानाध्यापक मस्तिष्क के रूप में होता है, शिक्षक आत्मा का स्वरूप होता है। आत्मा बिना शरीर (विद्यालय) निर्जीव होता है। इसलिये शिक्षक विद्यालय जीवन का गतिदाता है।

राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर कमीशन, कोठारी आयोग के अनुसार शिक्षकों का महत्व-

- **शिक्षा का रक्षक** - समाज में प्रचलित शिक्षा का रक्षक भी शिक्षक ही होता है। वास्तव में कोई भी शिक्षा व्यवस्था शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं जा सकती जिस स्तर के शिक्षक होंगे उसी स्तर की शिक्षा व्यवस्था होगी। शिक्षा की गुणात्मक स्थिति शिक्षकों की स्थिति तथा उनके गुणात्मक पहलू पर निर्भर है।
- **राष्ट्र का मार्गदर्शक** - डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार ''शिक्षक राष्ट्र का मार्गदर्शक है। शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों की पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण करने में धुरी का कार्य करता है। वह सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जनकर्ता है। वह बालक का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक हैं
- **राष्ट्र की उन्नति में स्थान** - अध्यापक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान है। कहा भी जाता है कि एक आदमी अपनी हत्या या दूसरों की हत्या करके एक ही जीवन का अंत करता है। शिक्षक अपने शिक्षण से ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करते हैं जो राष्ट्र की प्रगति के आधार होते है।
- **भविष्य निर्माता** - **डॉ. जाकिर हुसैन** के अनुसार ''वास्तव में'' शिक्षक हमारे भाग्य का निर्माता है। समाज अपने ही विनाश पर उनकी अपेक्षा कर सकता है।
- **संस्कृति का पोषण** - **गारफोर्य** के शब्दों में शिक्षक के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है समाज की परम्परायें नवयुवकों को ज्ञात होती है तथा वह नई एवं रचनात्मक उत्तरदायित्व ऊर्जाऐं छात्रों को सौंपता है। शिक्षक संस्कृति का परिमार्जक एवं रक्षक है।

शिक्षक के उत्तरदायित्व इस प्रकार हैं –

- ❖ अपने व्यवसाय के प्रति जवाबदेह।
- ❖ छात्रों का शैक्षिक एवं चारित्रिक विकास करना।
- ❖ छात्रों के कार्यो का मूल्यांकन करना।
- ❖ छात्रों का व्यवसायिक विकास करना।
- ❖ कक्षा का प्रबंध एवं समुचित शिक्षण देना।
- ❖ पाठ्यक्रमों सहभागी क्रियाओं का संचालन करना।
- ❖ सामाजिक एवं नागरिकता की शिक्षा देना।
- ❖ छात्रों की समस्या का समाधान करना।

1.5 विद्यालयीन शिक्षा में शिक्षक की भूमिका –

विद्यालय बाह्य जीवन का एक संक्षिप्त रूप है। **प्रोफेसर डीबी** के अनुसार विद्यालय का कार्य समाज के कार्यकलापों को सरल, शुद्ध और संतुलित ढंग से प्रस्तुत करना है ताकि बच्चा उन्हें सरलता से सीख सके। विद्यालयी शिक्षा में अध्यापक का कार्य अत्यंत ही महत्वपूर्ण होता है जैसे कि महान शिक्षाविद् फ्रोवेल ने कहा है कि अध्यापक एक माली है जो बच्चों का फूलों के समान पोषण करता है ताकि उनका वांछित रूप से पूर्ण और स्वच्छन्द विकास हो सकें शिक्षक अपने प्रयत्नों द्वारा बालक की सहायता करता है जो कि अपने स्वभाव के अनुसार उन स्तरों तक पहुँचने के लिये प्रयत्नशील है जिनसे कि वह शायद वंचित रह सकता है। अध्यापक की विद्यालय में सभी विद्यार्थियों की देखरेख करना व सही समय पर कक्षा में शिक्षण देना विद्यार्थियों को नैतिकता, समानता, बंधुत्व, भाई चारे शिक्षा देना और विद्यार्थियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करना शामिल है। छात्रों को राष्ट्र के प्रति समाज के प्रति संस्कृति के प्रति मूल अधिकारों के प्रति, मौलिक कर्तव्यों के प्रति अवगत कराना प्रमुख कर्तव्य है।

1.6 विद्यालयीन शिक्षा तथा अभिभावक –

बालक की समुचित शिक्षा तथा उसके सम्पूर्ण विकास के लिये आवश्यक है कि अध्यापकों तथा बच्चों के अभिभावकों में समुचित सम्पर्क, सहयोग तथा सहभागिता हो – **जार्ज ऑमिसन** ने अभिभावक, सहयोग पर इस प्रकार बल दिया है, सदा ही अभिभावक या माता–पिता अपने बच्चों का घर पर ध्यान रखें व विद्यालय में दी गई शिक्षा के बारे में थोड़ा सा बच्चों का ध्यान् रखना आवश्यक होता है।

छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण घर तथा विद्यालय दोनों जगह होता है। दोनों का एक ही लक्ष्य है। अतः दोनों का ही सहयोग अति आवश्यक है।

अध्यापक के सम्पर्क में छात्र केवल पॉच–छैः घण्टे रहते है। और वह भी वर्ष के पॉच या छः महीने ही लेकिन छात्रों का ज्यादातर शेष समय घर पर ही व्यतीत होता है। अतः आवश्यक हो जाता है कि स्कूल व घर के जीवन को एक सम्मिलित इकाई के रूप में परिणित किया जाये। इस प्रकार माता–पिता की भूमिका विद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करने के लिये निम्न होती है :–

1. बच्चों को तैयार कराके सही समय पर स्कूल भेजना।
2. बच्चों को समय–समय पर प्रोत्साहित करना।
3. शिक्षकों के प्रति सम्मान की भावना प्रकट कराना।
4. सभी साथी छात्रों के साथ परस्पर मेल–जोल से रहना सिखाना।
5. बच्चों को समय–समय पर कॉपी, किताब, पेन उपलब्ध कराना।
6. बच्चों को अच्छे संस्कार देना।
7. बच्चों को राष्ट्र एवं संस्कृति की शिक्षा देना।
8. बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करना जिससे वे सामाजिक व शैक्षिक मूल्यों को समझ सकें।

1.7 विद्यालयीन शिक्षा तथा समाज –

जे.एच. रॉनेक के अनुसार ''बालक का समाजीकरण बालकों के समूह में सर्वोत्तम रूप में होता है और एक बालक दूसरे बालकों का सर्वोत्तम शिक्षक है। बालकों की शिक्षा में शैक्षिक मूल्यों को उजागर करना समाज का मुख्य कार्य है या कहें तो बालकों के समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज के अन्तर्गत प्रमुख तत्व आते है।

(1). परिवार (2). स्कूल (3). पड़ोस (4). समूह

(1). परिवार – परिवार एक छोटी सी सामाजिक संस्था है। परिवार में माता–पिता–भाई–बहन व अन्य सगे सम्बंधी आते हैं, उनका बालकों की शिक्षा के प्रति हमेशा से ही मार्गदर्शन रहता है। समय–समय पर वे बच्चों को उनकी गलती से अवगत कराते रहते हैं व उनके अच्छे या बुरे कार्य की समीक्षा करते रहते ।

(2). स्कूल – स्कूल शिक्षा देने का एक औपचारिक अभिकरण है जहाँ पर अच्छा एवं शांत वातावरण होता है। बालकों के खेलने के लिये खेल का अच्छा सा मैदान भी होता है। स्कूल में अच्छे योग्य एवं अनुभवी शिक्षक होते है जहाँ पर वे बच्चों को अच्छी नैतिकता व भविष्य बनाने की शिक्षा देते हैं।

(3). पड़ोस– बालक के घर के पास–पड़ौसियों का भी बालकों की शिक्षा में अच्छा योगदान होता है। जैसे – यदि पड़ोसी बालक भी एक ही स्कूल में पढ़ता है तो स्वाभाविक है। वो एक दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करते हैं व विद्यालयीन शिक्षा लेने के लिये एक साथ स्कूल आना–जाना करते है।

1.8 अध्यापक एवं उनकी पृष्ठभूमि का शिक्षण अधिगम पर प्रभाव –

पृष्ठभूमि से आशय है शिक्षकों की प्रारम्भिक शिक्षा का क्षेत्र क्या है? ग्रमीण या शहरी शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित व शिक्षकों का शैक्षिक अनुभव 5 वर्ष का है या 5 वर्ष

से अधिक का अनुभव है। उस आधार पर शैक्षिक मूल्यों को जानना ही उनकी पृष्ठभूमि है।

शिक्षकों की पृष्ठभूमि शिक्षकों को किस प्रकार प्रभावित करती है – शिक्षक की प्रारम्भिक शिक्षा यदि ग्रामीण क्षेत्र से है तो उनकों अनेक समस्या जैसे–पढ़ने के लिये विद्यालय दूर होना आने–जाने का उचित साधन न होना वहीं शहरी क्षेत्र प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षकों को ऐसी समस्याओं से नहीं जूझना पड़ता इसी प्रकार शैक्षिक योग्यता शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता पाने के लिये भी पृष्ठभूमि की भूमिका अत्यंत ही सुदृढ़ होती है। इसी प्रकार शैक्षिक अनुभव यदि 5 वर्ष का है तो शैक्षिक मूल्यों का समझना या 5 वर्ष से अधिक का अनुभव है तब शैक्षिक मूल्यों को समझने के लिये विभिन्न पृष्ठभूमियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों को समझने के लिये पृष्ठभूमि एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है।

1.9 मूल्य क्या है?

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ इच्छायें होती है। व्यक्ति की भद्र कल्याणकारी व इच्छाऐं आकांक्षाऐं मूल्य के रूप में संज्ञापित की जाती है। अर्थात् मूल्य वह है जो मानव इच्छा की पूर्ति करता है। यह एक चिर स्थाई विचार, एक विशिष्ट प्रकार का आचरण अथवा जीवन का एक उच्चतम बिन्दु कहा जा सकता है। मूल्यों से संबंधित कुछ परिभाषाऐं निम्न है।

गार्डन ऑलपोर्ट के अनुसार – ''मूल्य एक विचार है, जिस पर व्यक्ति वरीयता से कार्य करता है।''

जार्ज–गीजर के अनुसार – ''मूल्य मनुष्य की बलवती इच्छाओं के मध्य चुनाव का परिणाम है।''

फिलिंक के अनुसर – ''मूल्य वह मानक कसौटी है जिसके आधार पर मनुष्य अपने समक्ष उपस्थित क्रियाकलापों में से चुनाव कर प्रभावित होते हैं।''

''**लूमीज एवं लूमीज** के अनुसार – ''मूल्य व्यवहार निर्धारक कारक है।''

''मूल्य को आंग्ल भाषा में वेल्यू (Value) शब्द से प्रयोग किया जाता हैं इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के वोलेड या वेलेयर से हुई है। वेलेयर का अंग्रेजी में अर्थ है एविलिटी, यूटिलिटी इम्पोरटेन्ट तथा इसका हिन्दी में अर्थ हुआ योग्यता, उपयोगिता व महत्व शाब्दिक अर्थ के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका महत्व सम्मान व उपयोग समझा जाता है वह मूल्य है। मूल्य से आशय वह वस्तु या बातें हैं जिनमें व्यक्ति रूचि लेता है।

मूल्य शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के मूल धातु के साथ यत् प्रत्यय लगाने से हुई है। इसका शब्द कोषीय अर्थ कीमत या दाम भी है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मूल्य किसी वस्तु की कीमत, क्षमता या उपयोगिता है जो मानव की आवश्यकताओं और इच्छाओं को संतुष्टि प्रदान करती है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये मूल्य अलग-अलग हो सकता है। मूल्य शब्द से अभिप्राय भावात्मक दृष्टि से मानव गुणों को अभिव्यक्त करता है। हिन्दी में मूल्य शब्द से पर्याय आदर्श शीलगुण आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

प्रत्येक समाज या विद्यालय में कुछ आदर्श हैं जिन पर सामाजिक एवं शैक्षिक प्रगति तथा परिवर्तन की दिशा निर्भर करती है। समाज या समूह में जो घटना होती है समाज उसका उचित अथवा अनुचित रूप में मूल्यांकन करता है इसी आधार पर समाज में घटित घटना को सही या गलत उचित या अनुचित ठहराया जाता है ओर ये ही मूल्य कहलाते हैं।

मूल्य हमारे आचरण का निर्धारण करते हैं जीवन के स्तरों का निर्माण करते हैं। मूल्य शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य व प्रसन्नता, साहस, निर्भीकता विवेक ज्ञान, परोपकारिता आदि के सांमजस्य में सहायक होते हैं क्योकि इन्हीं के मिलने से व्यक्तित्व का विकास होता है। मूल्यों के द्वारा उत्तम साहचर्य व अच्छे पड़ोसीपन की भावना जागृत होती है। परस्पर प्रेम सहानुभूति, भाईचारा आदि की भावना पनपती है। इस प्रकार यह सही है कि मूल्य हमारे जीवन के लिये अनिवार्य है।

1. मूल्य किसी भी सभ्यता, संस्कृति समाज, राष्ट्र एवं शिक्षा का मेरूदण्ड हैं।
2. मूल्य व्यक्तिनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ एवं सर्वभौमिक हो सकता है।
3. मूल्य मनुष्य, समाज व राष्ट्र के लिये कल्याणकारी होते है।

- **मूल्य परक शिक्षा –**

मूल्य एवं शिक्षा में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मूल्यों का सम्बन्ध उन चीजों से होता है, जिसकी हम कामना करते हैं या इच्छा करते हैं और उचित मानते हैं। ये मूल्य भौतिक अमूर्त गुण या आदर्श से सम्बन्धित हो सकते हैं। जैसे- कुर्सी, मेज, भवन, पानी पीने की इच्छा या सत्य, दया सहयोग शान्ति आदि। जबकि शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बच्चों में ऐसे विशेष गुणों, दृष्टिकोणों, मूल्यों तथा व्यवहार का विकास होता है जो सार्वभौमिक दृष्टि से हितकारी हो। अतएव मूल्य एवं शिक्षा में साध्य एवं साधन का, सिद्धान्त एवं व्यवहार का, सम्बन्ध होता है। मूल्य आत्मा के समान होता है तो शिक्षा शरीर के समान है। मूल्यों का विकास करना शिक्षा अपना कर्त्तव्य, कार्य एवं उद्देश्य मानती है। उद्देश्य के आधार पर शिक्षा अपना सम्पूर्ण स्वरूप निश्चित करती हैं। मूल्यों के प्रचार-प्रसार हेतु आधार प्रदान करती है। मूल्यों को व्यवहारिक रूप शिक्षा ही देती है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि शिक्षा के माध्यम से ही मानव समाज अपने मूल्यों को सुरक्षित रखता है, उन्हें आगे बढ़ाता है। वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों के अंतर्गत मानव संसाधनों का विकास, मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठा, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक स्वभाव, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वतंत्रता, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्रीय समाज एवं हमारे जीवन के लिए उत्कृष्ट गुणकारी मूल्यों को रखा गया है। इन्हीं को ध्यान में रखकर शिक्षा का पाठ्यक्रम शिक्षण विधि की योजना इस दृष्टिकोण से बनाई जा रही है कि इससे सांस्कृतिक परम्परा विकसित होगी, बच्चों में मूल्यवादी दृष्टिकोण होगा, जिससे राष्ट्र में उपजने वाली विध्वंसक गतिविधियों का अंत होगा। अस्तु जब मूल्यों को आधार बनाकर शिक्षा की

प्रक्रिया को संगठित एवं सुव्यवस्थित किया जाता है तो उसे ''मूल्य शिक्षा'' के नाम से अभिहित किया जाता है। कुछ लोग इसे मूल्यपरक शिक्षा से भी संज्ञापित करते है।

मूल्यों के प्रकार – विविध मूल्यविदों ने मूल्यों का वर्गीकरण अनेकों आधार पर किया है। जिसमें से कुछ प्रमुख वर्गीकरण इस प्रकार है।

1. इनसाइक्लोपीडिया एण्ड इथिक्स में मूल्यों के छैः प्रकार बताये गये हैं।
   (i) सुखात्मक मूल्य (ii) सौंदर्यपरक मूल्य
   (iii) उपयोगिता मूलक मूल्य (iv) नैतिक मूल्य
   (v) धार्मिक मूल्य (vi) तर्क मूलक मूल्य
2. पैट्रिक ने मूल्य के तीन प्रकार बताये हैं –
   (i) धार्मिक मूल्य (ii) नैतिक मूल्य
   (iii) सौंदर्य शास्त्रीय मूल्य

(3). स्प्रैंजर ने मूल्य के छैः प्रकार बताये हैं। –
   (i) सैद्धांतिक मूल्य (ii) आर्थिक मूल्य
   (iii) सामाजिक मूल्य (iv) राजनीतिक मूल्य
   (v) सौंदर्यपरक मूल्य (vi) धार्मिक मूल्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद द्वारा जीवन मूल्यों का वर्गीकरण –

1. शैक्षिक मूल्य या शैक्षणिक मूल्य
2. नैतिक मूल्य
3. सामाजिक मूल्य
4. राजनैतिक मूल्य
5. वैश्विक मूल्य
6. पर्यावरण संबंधी मूल्य
7. सांस्कृतिक मूल्य

1.10 शिक्षण अध्यापन के दौरान बालकों में मूल्यों का विकास–

जब कक्षा में शिक्षक अध्यापन कार्य करते है, तो स्वयं ही सही समय पर कक्षा में पहुचते हैं व छात्रों को भी कक्षा में सही समय पर आने को कहते है। शिक्षक छात्रों को ऐसी शिक्षा देते है जिससे उनका सर्वांगीण विकास होता है।

तो मुख्य रूप से मूल्यों का विकास शुरू हो जाता है। छात्रों के मनोमस्तिष्क में एकाएक मूल्य शिक्षा का वीजारोपण नही किया जा सकता है इसके लिये समयबद्ध एवं व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षण की रूप रेखा बनाना परम आवश्यक है शिक्षण का मुख्यलक्ष्य अधिष्ठाकर्ता के व्यवहारों में परिवर्तन लाना है ओर विविध तथ्यों का ज्ञानात्मक, भावत्मक, कियात्मक ज्ञान कराना है। शिक्षण में मूल्यों के विकास करने मे सहपाठ्यचारी य पाठ्क्रम सहभागी कियाऐं विशेष सहायता करती है। इससे छात्र आसानी से किसी तथ्य के बारे मे ज्ञान, क्रिया से वारीकियों को समझ लते है। पाठ्य सहचारी क्रियाओं में किसी तथ्य को व्यवहारिक रूप मे प्रस्तुतिकरण करके छात्रों के मनोमस्तिष्क मे विषय के प्रति कौतूहल का संचार किया जा सकता है। इससे छात्रों मे अववोध का विस्तार होता है। छात्रों को किसी तथ्य को जानने, समझने विचार करने तथा करके सीखने में पाठ्यसहभागी क्रियाऐं का महत्वपूर्ण स्थान है।

मूल्यो के विकास करने मे अनेक पहलुओं का समावेश होता है। इसके अंतर्गत मूल्यों के प्रति संवेदना जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के संदर्भ मे सही मूल्य का चुनाव करना उन्हे आत्मसत करना उन्हें जीवन मे उतारना व उन्हे व्यवहार मे लाना आदि बातें आती है विद्यालयी परिवेश में मूल्यों के विकास हेतु जहॉ पुस्तकीय ज्ञान प्रदान किया जा सकता है वहीं इसको व्यवहारिक तथा सामाजिक स्वरूप देने और विद्यार्थियों में मूल्य सम्वंधी निपुणता का विकास करने हेतु विद्यालयों मे पाठ्य सहगामी कियाओं खेलकूद आदि का आयोजन करना भी आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों में अन्तर्निहित विविध प्रकार की अभिवृत्तियों अभिरूचियों को विकसित एवं मुखरित करने मे विशेष मदद मिलती है। इसी कारण **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986** के अंतर्गत खेलकूद, योगासन, स्काउट गाइड, रेडकॉस तथा पाठ्यसहचारी कियाकलापों की व्यवस्था एवं आयोजन पर बल दिया गया है।

1.11 मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले कारक –

मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित है–

(1) **परिवार** :– बालको के मूल्यपरक विकास के लिये परिवार जैसा उपयुक्त एवं अपयोगी वातावरण मिलना अत्यंत दुर्लभ है। सत्य बोलना, प्रेम, सेवा समर्पण, त्याग, दया, ईमानदारी जैसे नैतिक सदगुण बच्चा परिवार मे ही सीखता है। वाल्याव्यस्था से लेकर प्रोढ़ावस्था तक एवं उसके बाद रहता है। इसलिये परिवार को जीवन की शाश्वत पाठ्शाला कहा गया है। विद्यालय की शिक्षा पर्याप्त नही होती। परिवार पुस्तकीय ज्ञान से भावनात्मक व संस्कार का ज्ञान नही हो तो परिवार मे ही उपयुक्त वातावरण द्वारा उनमें अच्छी आदतों का विकास होता है। उनके नैतिक विकास की नींव परिवार में ही पड़ती है, क्योकि परिवार के अनुपयुक्त वातावरण में बालक निषेधात्मक मूल्य आत्मीकृत कर सकते हैं। कभी–2 अच्छे संस्कारी घरों के बच्चे भी बिगड़ जाते है। माता पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के नैतिक आचरण की व्यवहारिकता से बच्चों के आचरण पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता हैं।

(2) **विद्यालयः**– शाला शिक्षा देने एवं प्राप्त करने का प्रमुख केन्द्र है। जैसे हमारे विद्यालय हैं, वैसा ही हमारा जीवन होगा। हम सामंतो राजकुमारों तथा सरदारो के विना रह सकते हैं, किन्तु विद्यालयों के बिना हमारा काम नही चल सकता। मूल्यपरक शिक्षा के विकास के लिये विद्यालय का वातावरण प्रजातांत्रिक एवं उत्साहवर्धक होना चाहिए। विद्यार्थियों को विद्यालय का विकास, स्वच्छता, अनुशासन, व्यवस्था आदि उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौपने चाहिऐं। एवं इन कार्यो को करते समय उनकी गतिविधियों का मूल्यांकन करना चाहियें। सप्ताह में एक दिन विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा एवं व्यक्तित्व के विकास हेतु साहित्यक सांस्कृतिक समारोह अवश्य ही आयोजित किये जायें। जिससे उनमे निष्ठा, सहनशीलता, दयालुता, क्षमाशीलता, उदारता, सुख दुःख में साथ देना आदि भावनाऐं विकसित होती हैं। विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों के द्वारा समूह भावना जाग्रत होती है। और इससे एक दूसरे को जानने – समझने के अवसर उपलब्ध होगें। उन्हे मानवीय गुण दोष का माननीय व्यवहार तथा समझ का प्रत्यक्ष अनुभव होगा।

विद्यालय का प्रांगण, वातावरण आदि साफ सुथरा तथा पुष्प लताओं से युक्त होना चाहिऐ। विद्यालय के महत्वपूर्ण स्थानों पर विभिन्न सूक्तियों तथा प्रेरणाप्रद उद्धरणों का मनोरम प्रदर्शन होना चाहिऐ। इन सबका विद्याथियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पडता है। अतः विद्यालय की साज सज्जा का कार्य भी अंततः विद्यार्थियों को सौंपा जा सकता है।

मूल्य के विकास की प्रक्रिया –

मनुष्य के अपने पूर्वजन्म तथा वंशकुल माता–पिता आदि से ग्रहण किये हुये विशेष संस्कार उसके साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े होते हैं और उन्हीं संचित संस्कारों के अनुरूप मनुष्य अपने चारों ओर व्याप्त संसार तथा जीवन की परिस्थितियों से अपने जीवन मूल्यों के विश्व को खोजकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण ज्ञात अज्ञात रूप से करता है, और वही उसका संस्कार होता है। इस प्रकार विभिन्न व्यक्तियों का मैं उनके संस्कारों रूचियों तथा स्वभावों को द्योतक होने के कारण सबसे भिन्न–2 होता हैं। उदाहरण के लिये एक साहित्यकार जिस अर्न्तमन के संसार में रहता है, एक राजनीतिज्ञ उसमें नहीं रहता उसका संसार मुख्यतः परिवर्तित होती हुई वर्तमान वाह्य वास्तविकता का संसार होता है। इसी प्रकार एक समाज सेवी या व्यापारी का भी एक अपना पृथक संसार होता है। यही बात अध्यापक, विद्यार्थी, वकील, चिकित्सक अभियन्ता आदि के विषय में कही जा सकती है। अपने–2 संस्कारों एवं परिवेश से इनका अपना संसार बनता है। परिवेश एवं संस्कारों के वैभिन्य से इनके जीवन–मूल्य भी पृथक–2 हो सकते हैं।

1.12 शैक्षिक मूल्य का महत्व एवं आवश्यकताऐं –

शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन–अध्यापन अनुशासन नियम पालन आदि मूल्य शैक्षिक मूल्य कहलाते हैं। मूल्य एवं शिक्षा के आपसी संबंधों को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि दोनों एक दूसरो के पूरक हैं। मूल्यों का शिक्षा में अनुस्थापन ही शैक्षिक मूल्य कहलाता है। वस्तुतः बहुत से ऐसे विचारक हुये हैं जो उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री न होकर समाजशास्त्री, आध्यात्मिक, धार्मिक,

क्षेत्रीय Regional पुस्तकालय

नैतिक वेत्ता अर्थशास्त्री, पर्यावरण विद् जनसंख्या विद् थे। उनके बहुत से विचार सर्वकालिक, जनहितकारी और कल्याण का दिग्दर्शन कराने वाले हैं। इनकों आत्मसात् करने पर शिक्षा में उपस्थित विविध समस्याओं के समाधान में बहुत सहायता मिल सकती है। वैसे भी शिक्षाशास्त्री को विविध विषयों से सम्बंद्ध अनुशासन (शास्त्र) माना जाता है। ऐसी परिस्थिति में जब विविध धर्मग्रंथों, विचारकों की कृतियों में सन्निहित सर्वकल्याणकारी उपादेय तत्वों को निकालकर शिक्षा के विविध उपांगों में उसका प्रयोग कर शिक्षा की समस्याओं का समाधान किया जाता है। तो वह शैक्षिक मूल्य कहलाने लगते हैं। शैक्षिक मूल्य शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों की इच्छा, संतुष्टि कामना उपयोगिता से सम्बंधित होते है। यह शिक्षक-शिक्षार्थी की इच्छा संतुष्टि कर उनको आत्मानुभूति प्रदान कर शिक्षा प्रक्रिया से जोड़ता है। शैक्षिक मूल्यों से शिक्षक तथा विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति निष्ठा, कर्तव्य परायणता सृजनात्मकता, अभिप्रेरणा का संचार होता है और शिक्षा मूल्यवादी तत्वों से सम्पृक्त होकर व्यक्ति के बहुआयामी विकास में सहायक बनती है। मूल्य शिक्षा भी इसी दृष्टिकोण का धोतक है। इसलिये मूल्य शिक्षा और शैक्षिक मूल्य एक ही तथ्य पर आधारित हैं। दोनों में विभाजन रेखा खींचना बहुत कठिन है।

भारत अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक नैतिक, चारित्रिक सम्पदा के कारण अत्यन्त प्राचीन काल से ही विश्व गुरू की मान्यता से जाना जाता रहा है। आज शिक्षा में सुधार हेतु विभिन्न योजनायें बनाई गई किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिक, फैशनपरस्त, भौतिकवादी अस्तित्वादी विचारों के प्रभाव में आकर यहाँ का जनमानस भारतीय आदर्शो, मूल्यों, मान्यताओं, आस्थाओं को विस्मृतकर पाश्चात्य जीवनशैली को आत्मसात करके उसे अपने जीवन का अभिन्न पहलू बना लिया है। इससे दया, सहयोग, प्रेम, सह अस्तित्व, परमार्थ समता पर आधारित भारतीय समाज, संस्कृति एवं शिक्षा भी पाश्चात्यवादी दृष्टिकोण से आच्छादित हो गई है। देश के प्राचीन आदर्शो, मूल्य मान्यताओं का अधोतन होता जा रहा है। व्यक्ति शिक्षित होते हुये भी अशिक्षित जैसा आचरण, व्यवहार

कर रहा है। भारतीय शाश्वत्, सनातन मूल्य निरन्तर कमजोर पड़ते जा रहे है। परिणामतः सर्वत्र अनेकों दुःखदायी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है। स्वार्थपरता, दंगा, अराजकता, असहयोग से व्यक्ति और समाज में कटुता, अहवादिता, द्वेष, ईर्ष्या का प्रादुर्भाव हो रहा है। यह संस्थिति राष्ट्र, समाज परिवार के बहुमुखी विकास में अत्यंत घातक है। अतएवं आवश्यकता इस बात की महसूस की जा रही है कि मूल्य शिक्षा का ऐसा स्वरूप बनाया जाये कि शिक्षा के माध्यम व्यक्ति मूल्यवादी मान्यताओं से सम्पृक्त होकर, प्राचीन भारतीय, सनातन मूल्यों का आधुनिकता के साथ समन्वय करते हुये आगे बढ़े सकें। अतएवं व्यक्ति के व्यक्तित्व का बहुमुखी एवं समग्र विकास करने के लिये विविध मूल्यों को ज्ञान प्रदान करने हेतु मूल्य शिक्षा की अत्यंत ही आवश्यकता है।

शैक्षिक मूल्यों के अंतर्गत अने वाली प्रमुख बातें इस प्रकार रखी जाती सकती हैं।

(क) अध्यापन में नियमितता एवं निष्ठा
(ख) मूल्यांकन में वस्तु-निष्ठता एवं निष्पक्षता
(ग). शोध एवं प्रकाशन के सम्बन्ध में ईमानदारी
(घ) प्रतियोगिता की भावना
(इ) उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर बनने की भावना
(च) व्यवसाय के प्रति आस्था
(छ). विद्यार्थियों की तथा स्वयं की सृजनात्मकता का पोषण।
(ज). मौलिकता के प्रति सद्भाव ताकि पूर्वाग्रहों एवं दुराग्रहों के अनिष्टों को टाल सकें।

1.13 मूल्यों की शिक्षा के विभिन्न आयोगों व समितियों के शिक्षा एवं शैक्षिक मूल्यों पर विचार –

- **राधाकृष्णन आयोग (1948-49)** – सैडलर कमेटी के अनुसार शिक्षा के विकास के लिये अनुदान राशि को बढ़ा दिया गया है जिसके कारण अनेकों

शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गई व पुराने विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों की दशा सुधारने तथा शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिये अनुदान दिये गये लेकिन शिक्षा के स्तर की गिरावट बराबर बनी रहे जो कि सरकार तथा जनता के लिये चिंता का विषय था दूसरा कारण यह था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति बदल गई थी। इस बदलती हुई परिस्थितियों को देखते हुये शिक्षा के लिये नवीन योजना की आवश्यकता थी।

- **आयोग की सिफारिशें** – अध्यापकों के विषय में

422

1. शिक्षक योग्य और चरित्रवान होना चाहिऐ।
2. शिक्षकों को अपने विषय का समुचित ज्ञान होना चाहिऐ।
3. शिक्षकों के द्वारा छात्रों में परिश्रम और शोध की जिज्ञासा पैदा की जानी चाहिए।

- **कोठरी कमीशन** – (1964–66) शिक्षा आयोग 14 जुलाई 1964 को भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. डॉ. दौलतराम कोठरी की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग की नियुक्ति की इसे कोठरी कमीशन भी कहा जाता है।

  आयोग की नियुक्ति के सम्बन्ध में सरकार का कहना था कि शिक्षा के विकास में कार्य हुआ है। लेकिन समय की मांग के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा प्रंणाली का विकास नहीं हुआ है। आज भी शिक्षा के विकास में विचार एवं कार्य में महान अंतर है। राष्ट्रीय एकता सामाजिक परिवर्तन, धर्म निरपेक्षता, निर्धनता की समाप्ति, औद्योगिक एवं कृषि का विकास आधुनिक विज्ञान की प्रकृति संगठन तथा संतुलित शिक्षा व्यवस्था से ही सम्भव है। यदि भारतीय प्रजातंत्र को वास्तविक बनाना है तो बहुसंख्यक लोगों को भारत तथा विश्व की जानकारी होना चाहिऐ। संविधान में प्रदत्त 14 वर्ष के बच्चों के लिये निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा तथा निरक्षरता को दूर करना बढ़ती हुई बेरोजगारी आदि समस्याओं का अभी तक कोई

समाधान नहीं हुआ है। इसलिये शिक्षा प्रणाली के हर पहलू की जाँच की जाये जिससे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आधार शिला रखी जा सके।

- **शिक्षा आयोग के सुझाव इस प्रकार है :-**

1. शिक्षा का उत्पादन
2. सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता
3. अध्यापकों की शैक्षिक स्थिति
4. शैक्षिक अवसरों की समानता
5. अध्यापक शिक्षा

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986**

प्रारम्भ से लेकर आज तक शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। हर देश ने अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान के लिये शिक्षा नीतियों में परिवर्तन और विकास किया है। हमें भी इस संदर्भ में पुनः विचार करना होगा।

- **शिक्षा की भूमिका तथा मूलतत्व -**

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में शिक्षा सभी के लिये जरूरी है। शिक्षा संकीर्णता को कम करती है और मानसिक स्वतंत्रता एवं भावनात्मक विकास, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता तथ जनतंत्र के विकास की प्रेरणा देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह मूल आधार है।

शिक्षक -

1. शिक्षकों का चयन उनकी योग्यतानुसार किया जाना चाहिये और उनकी पदोन्नति वेतन भत्ते स्थानांतरण आदि के लिये मार्गदर्शिका तैयार की जायेगी।
2. प्राथमिक स्कूल शिक्षक तथा अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा में लगे व्यक्तियों के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था की जायेगी डाइट तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान जैसी संस्थाऐं शिक्षक प्रशिक्षण का कार्य करेगी।

1. शिक्षा के प्रबंध एवं नियोजन की व्यवस्था में अमूल परिवर्तन करना होगा।

2. सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ ऐजुकेशन के शैक्षिक विकास के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

3. जिला एवं स्थानीय स्तरों पर शिक्षा के विकास के लिये संस्थायें स्थापित की जायेंगी। योजनाओं का क्रियान्वयन के तहत अनुक्रमांक 5-31 में अध्यापक प्रशिक्षण के बारे में कहा गया है कि वर्तमान प्रणाली में शिक्षण प्रशिक्षण का प्रावधान नहीं है। इसके लिये निम्नांकित गतिविधियाँ संचालित की जायेगी।

4. सभी नये प्रवक्ता स्तर के प्रवेशार्थियों के लिये शिक्षण विधियों, शिक्षण कला, एवं शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अभिनन्दन कार्यक्रम।

5. शिक्षकों के लिये रिफ्रेशर कोर्स प्रत्येक शिक्षक के लिये 5 वर्ष में एक बार अनिवार्य।

6. विश्वविद्यालय और कॉलेजों के संसाधनों को जुटाकर अभिनन्दन कार्यक्रम।

7. शिक्षकों को सेमीनार में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन।

8. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षकों में प्रोत्साहन हेतु विशेष कार्यक्रम।

9. वर्तमान संसाधन समिति की सिफारिशों की क्रियान्वयन हेतु जाँच।

10. समान योग्यता परीक्षा के आधार पर शिक्षकों की नियुक्ति।

11. अध्यापक निष्पत्ति मूल्यांकन की विधि का विकास।

12. विश्वविद्यालय को प्रबंध प्रणाली का अध्यापकों की अधिक भागीदारी की दृष्टि से पुर्नगठन।

(डॉ. वरिष्ठ एवं डॉ. शर्मा "भारतीय शिक्षा की नई दिशा मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस 1990 पृ.स. - 44)

- **मैकानियर समिति (1994)**

रिपोर्ट के अनुसार "अध्यापन की पूरी योग्यता के दो भाग हैं। शिक्षा और प्रशिक्षण में प्रमुखता उसके व्यवसायिक कर्तव्यों में प्रविष्ट होने की है तथा आगे

का प्रशिक्षण कार्य कर रहे एक अध्यापक के तौर पर बिताये कुछ समय के बाद होता है।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968).-**

सामाजिक दृढ़ता एवं राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने के लिये समान स्कूल पद्धति को अपनाया जायेगा। प्रतिभाओं की खोज के लिये हर सम्भव प्रयास किये जायेंगे। केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की नीति सम्बन्धी रिपोर्ट (1992) पाठ्यचर्या द्वारा मूल्यों की शिक्षा व पद्धति की जानकारी दी जानी चाहिये। फलतः यह विद्यालयों व अन्य शैक्षिक संस्थाओं और विशेषकर अध्यापकों का उत्तरदायित्व है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को इस भांति संचालित करे कि बच्चे सही अर्थो में मूल्य शिक्षा ग्रहण कर सकें। अध्यापक के नाते विद्यार्थियों को शैक्षिक मूल्यों की शिक्षा देना उनका एक ऐसा अपरिहार्य कार्य है। जिसके उत्तरदायित्व से ही वे किसी भी भांति पलायन नहीं कर सकते अध्यापकों द्वारा मूल्य शिक्षा से पलायन का अर्थ है कि विद्यालय ही बंद कर दिये जाये।

- **एस.व्ही. चौहान समिति (1999) -**

समिति ने मूल्य शिक्षा पर आधारित शैक्षिक मूल्यों को रेखांकित करते हुये शिक्षक शिक्षा में शैक्षिक मूल्य को समावेश करने के लिये अत्यंत प्रासंगिक विचार प्रकट करते हुये सुझाव दिया है कि मूल्य शिक्षा को शिक्षण अधिगम प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम का अंग होना चाहिए। भविष्य में शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य के प्रत्यय से परिचित कराया जाना चाहिये। ये सभी विधियाँ प्रविधियाँ जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों के मनौवैज्ञानिक विकास के विभिन्न चरणों में मूल्यों का ज्ञान देने में लाभप्रद हो तथा इसको शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अनिवार्य घटक बनाया जाये।

1.14 शैक्षिक मूल्यों के प्रति शिक्षक की भूमिका - हम एक प्रकार से यह कह सकते है कि शिक्षक समाज एवं छात्रों के चारित्रिक विकास की धुरी होता है। जिसके परिता सर्वत्र संस्कार विद्यमान होते है तथा जिससे

छात्रों के बीच संस्कारित करने की आवश्यकता होती है। साथ ही शिक्षक को एक आदर्श तथा प्रतिदर्श माना जाता है। शिक्षक अपने ज्ञान एवं अनुभव से छात्रों में मूल्य संस्कारित कर सकते हैं। तथा छात्रों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। एक अच्छे शिक्षक का सर्वोत्तम गुण यह है कि उसे विषय वस्तु या उस क्षेत्र में उसके पास वरेण्य गुण विद्यमान हो महाँत्मा गॉधी के अनुसार (शिक्षक राष्ट्र निर्माता है) अपितु छात्रों में मूल्यों की शिक्षा संस्कारित करना एक भागीरथ प्रयास कहा जा सकता है। तथा इसका कार्यान्वयन होना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। शासकीय स्तर पर मूल्य शिक्षा की चाहे कितनी ही मनोहर योजनाऐं बना ली जाऐं किन्तु अध्यापक यदि उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित न करें तो वह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती। अतः सबसे पहले अध्यापकों में विविध नैतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का अभ्यन्तरीकरण अत्यन्त आवश्यक है। दीप से दीप जलता है। वैसे ही नैतिकता-नैतिकता को जन्म देती है। अध्यापक छात्रों के सामने नैतिक आदर्श प्रस्तुत करें जिन्हें देखकर या अनुभव करके विद्यार्थी भी मूल्यों का आचरण कर सकें।

1.15 अध्ययन की आवश्यकता –

उच्च प्राथमिक शिक्षा में सुधार हेतु विभिन्न योजनाऐं बनाई गई व उनका क्रियान्वयन भी किया गया इसके साथ शिक्षा का प्रसार होता गया लेकिन आज की स्थिति में सभी और सभी वर्गो में मूल्य हीनता और अनैतिकता देखने को मिलती है। आज नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक, पारिवारिक मूल्यों में कमी देखने और लगातार गिरावट होते नजर आती है। यह गिरावट शिक्षा के क्षेत्र में भी देखने को मिल रही है। इसके कारण ही उदासीनता, उत्तरदायित्व, अनुशासनहीनता, आदि का जन्म हुआ है। अंततः मूल्यों की रूजवण पुनः प्रतिष्ठा के अभाव के कारण शिक्षा के गुणात्मक सुधार की आशा हेतु स्थिर होगी। शिक्षक समाज एवं राष्ट्र के कर्मधार है। शिक्षक के तार्किक शक्ति का

विकास होता है। उनमें इतनी बौद्धिक, शारीरिक क्षमता एवं समझ उत्पन्न होती है कि वे भविष्य में देश के नीव के मजबूत पत्थर साबित होते है। दूसरी ओर आज के विद्यालय में समस्या यह है, कि वे केवल पुस्तकीय ज्ञान, विद्यार्थियों पर थोप देते हैं। छात्रों को अपने रूचि के विपरीत कार्य करने पड़ते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उनमें उत्साह की कमी हो जाती है और वे अच्छे मूल्यों को अपने व्यक्तित्व में शामिल नहीं कर पाते है। इस प्रकार पुस्तकीय ज्ञान से विद्यार्थी का व्यक्तित्व स्वास्थ्य व्यक्तित्व नहीं बन सकता। अध्यापकों का चाहिए कि वे पुस्तकीय ज्ञान देने के अतिरिक्त अपने जीवन को व्यवहार में इस तरह ढालें जिससे अन्य छात्रगण उनका अनुसरण कर सकें और उनमें भी अनुशासन देश-प्रेम, कर्तव्यपरायणता जैसे शैक्षिक मूल्यों का विकास संभव हो सके।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार - ''अध्यापकों का स्वयं चरित्र इतना उज्जवल हो कि उनके कहने और करने में कोई अंतर न हो जब हम इन आदर्शो को व्यवहार में परिणित करेंगे, तब ही हम अपने राष्ट्र के उज्जवल भविष्य के विषय में आशावान रह सकते है।

अध्यापकों का विशेषकर उच्च प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों के प्रति जो दृष्टिकोण है। वह वर्तमान में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कहाँ तक सकारात्मक है तथा कहाँ तक कम सकारात्मक है। इसी समस्या के प्रति शोधकर्ता ने अपना यह अनुसंधान कार्य चुना है। जो वर्तमान परिपेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करने के लिए है।

1.16 समस्या कथन -

विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

1.17 शोध कार्य में प्रयुक्त चर

- ❖ शैक्षिक मूल्य
- ❖ शैक्षिक योग्यता
- ❖ शैक्षिक अनुभव

1.18 समस्या का सीमांकन –

- प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के नरेला विधानसभा क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों तक सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल नियमित शिक्षकों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल वे शिक्षक चयनित होगें जिनको 5 वर्ष या उससे अधिक का शैक्षिक कार्य करने का अनुभव है।

1.19 शोध कार्य के उद्देश्य –

- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अनुमापन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
- विभिन्न पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.20 शोध कार्य की परिकल्पनाऐ :–

Ho 1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 2. शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 3. 5 वर्ष व 5 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

उप–परिकल्पनाऐ :–

Ho 1.1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.2 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.3 पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.4 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.5 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.6 पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.7 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के व्यवहारिक क्षमता क में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.8 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.9 पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.10 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.11 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.12 पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.13 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.14 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.15 पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

द्वितीय–अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

बेस्ट (1963). के अनुसार ''व्यवहारिक दृष्टि से हमारा मानव मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त, जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में इसके विकास का आधार है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि सम्बन्धित साहित्य के द्वारा किसी भी अध्ययन से सम्बन्धित समस्त साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है कि किसी क्षेत्र में कितना कार्य किस रूप में हो चुका है? लोगों ने क्या परिकल्पनाऐं की थीं? किस विधि से ऑकड़ों का संग्रहण व सारणीयन व विश्लेषण करके क्या परिणाम निकले? इसका निर्णय बड़ा ही महत्वपूर्ण तथा अनुसंधान कार्य की वास्तविक पूर्णता में मदद करता है। शोधकर्ता ने उपुयक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य की समीक्षा की ताकि प्रस्तुत अध्ययन के नियोजन एवं महत्वपूर्ण पदों के निर्धारण में सहायता मिल सके।

2.2 सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ –

1. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अंतर दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
4. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
5. पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता चलता है।

6. सत्यापन के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में शोध करने की आवश्यकता होती है।

7. इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 सम्बन्धित शोधकार्यो का पुनरावलोकन –

संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के लिये विभिन्न मनौवैज्ञानिक एवं सामाजिक शोध ग्रंथ, इन–साइक्लोपीडिया एवं पत्र–पत्रिकाओं का अवलोकन किया। परन्तु इस समस्या से सम्बन्धित बहुत ही कम शोध कार्य मिले सम्भवतः किसी शोध कार्य का ध्यान इस समस्या की ओर अग्रेषित नहीं हुआ इस प्रकार के जो कार्य हुये थे अंशतः छात्रों पर ही किये गये इसलिये ऐसा शोध कार्य भारतवर्ष में नहीं के बराबर हुआ जिसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से इस समस्या से है। मुख्य कार्य जो किये गये यद्यपि उनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रस्तुत समस्या से है।

श्रीवास्तव (1990) ने शैक्षिक मूल्यों के द्वारा शिक्षकों को रूचि और कार्य संतुष्टि में बदलाव का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोध कार्य के उद्देश्य इस प्रकार थे।

- शिक्षा के विविध स्तर पर करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं में रूचि का अध्ययन करना।
- शिक्षकों में विविध प्रकार के मूल्यों द्वारा रूचि में होने वाले बदलाव का अध्ययन करना।
- शिक्षा के संस्थानों के विविध क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों में मूल्यों द्वारा कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना और शिक्षक–शिक्षिकाओं के परिवर्तन के अंतर का अध्ययन करना। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के 300 शिक्षकों का यादृच्छिक पद्धति से न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया।

मुखोपाध्याय – रूचि में बदलाव की परिसूची

प्रमोद कुमार – कार्य संतुष्टि प्रश्नावली

एच.वी.एल. सिन्हा – शिक्षक मूल्य परिसूची

प्रदत्तों के संकलन हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, सहसंबंध की सार्थकता, फिशर का जेड सूत्र का उपयोग किया गया इसमें मुख्य निष्कर्ष आये।

- शिक्षिकाओं में शिक्षकों की अपेक्षा कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई।
- प्राथमिक शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों एवं रूचि परिवर्तन के सम्बन्ध में सार्थक अंतर पाया गया।
- माध्यमिक शिक्षकों के लिंग भेद अनुसार आर्थिक मूल्य रूचि बदलाव में सार्थक अंतर पाया गया।
- उच्च स्तर के शिक्षकों के लिंग भेद अनुसार मूल्यों एवं रूचि परिवर्तन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

वशिष्ट (1997) ने एक प्रोजेक्ट ''इण्टरनेशल एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम'' शुरू किया। जिसमें अध्यापकों व विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों को बढ़ावा देने के लिये आष्टांग योग पर आधारित एक नयी विधि तैयार की गई। इस विधि का प्रयोग से निम्न परिणाम प्राप्त हुए।

- उनके मूल्य संबंधित क्षेत्रों में एक सार्थक विकास देखा गया।
- इस प्रयोग में लाने से बालकों में मूल्यों के प्रति जागरूकता व ज्ञानात्मक अभिवृत्तियों का विकास देखा गया।
- निम्न उपलब्धि वाले बालकों के प्रतिशत में गिरावट आयी व मध्यम उपलब्धि वाले बालक, उच्च उपलब्धि वाले बालकों में बदल गये।

सेन गुप्ता (2001) ने वर्तमान समय के शिक्षण अधिगम वातावरण में अच्छे अध्यापक के गुणों व मूल्यों के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि

- बालक अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों, उनके व्यवसायिक मूल्यों, नवाचारों तथा शिक्षक अधिगम तकनीकों को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं।
- वे अध्यापक जो बालको को व्यक्तिगत स्वतंत्रता देते है उनकी समस्याओं को समझते हैं तथा स्वयं आदर्श प्रस्तुत करते है, उन्हें बालक महत्ता देते हैं।

काकुर (1981) ने शिक्षकों के मूल्य का छात्रों पर असर का अध्ययन किया।

इस शोध के द्वारा छात्रों के मूल्यों पर शिक्षकों का परीक्षण किया गया ऑलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे के मूल्य अध्ययन मापनी का ब्रिटिश रूपान्तरण का उपयोग किया गया न्यायदर्श के रूप में पटियाला से 150 स्नातक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। परिणाम यह दर्शाते हैं कि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समाप्ति के पश्चात प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य से कम परिवर्तन दिखाई दिया। यद्यपि परिणाम यह भी दर्शाता है कि शिक्षकों का छात्रों के मूल्यों पर क्या प्रभाव है। अतः शोधकर्ता सावधान करता है कि परिणामों को सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता क्योंकि वह परिणाम कुछ विशिष्ट परिस्थितियों से प्राप्त हुये है। जिनके तहत शोध कार्य सम्पन्न किया गया।

अरूण (1985) ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के सेकेण्डरी विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह पाया –

- शहरी क्षेत्र बालक–बालिकाओं के शैक्षिक मूल्य ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकाओं की तुलना में अधिक है।
- बालिकाओं में बालकों की तुलना में शैक्षिक मूल्य अधिक है।

राघवेन्द्र (1964) ने सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों में मूल्य प्राथमिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि

- सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों के सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर हो।
- बालक व बालिकाओं में सैद्धान्तिक सामाजिक व सौंदर्यात्मक मूल्यों के संदर्भ में सार्थक अंतर है।

- बालिकाऐं बालकों की तुलना में सौंदर्यात्मक मूल्यों में ज्यादा महत्व देती है।

आनंद (1980) ने शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों व कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया है। उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के मूल्यों और उनकी संतुष्टि में सम्बन्ध को खोजना है। इस शोधकार्य में 143 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया जिसमें 99 पुरूष व 44 महिलाऐं थी। जो कि सिक्किम के विभिन्न स्कूलों में अध्यापन का कार्य करते हैं। एक कार्य संतुष्टि और ऑलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे की मापनी का उपयोग किया गया अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि शिक्षकों में शोध राजनैतिक और आर्थिक मूल्यों को अधिक पाया जबकि शिक्षकों में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मूल्य अधिक देखे गये। धार्मिक और सौंदर्यात्मक मूल्य निम्न स्तर पर महिला और पुरूष शिक्षकों में पाये गये। पुरूषों की तुलना में महिलाओं में कार्य संतुष्टि अधिक थी यह भी देखा गया कि धार्मिक और सौदर्यात्मक मूल्य और शिक्षकों की संतुष्टि में सकारात्मक सहसम्बन्ध थे।

मिस्त्री (1988) ने ग्रामीण, शहरी और निजी गुजराती कॉलेज और माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

यह शोधकार्य उस अध्ययन को व्यक्त करता है, जिसके द्वारा उन कारकों को खोजा गया, जिससे मूल्यों अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अंतर पाया जाता है। इस अध्ययन हेतु ऑलपोर्ट की प्रश्नावली एडवर्ड की व्यक्तित्व महत्व अनुसूची और मरे की व्यक्तित्व आवश्यक परीक्षण गुजरात के ग्रामीण व शहरी के यादृच्छिक 111 शिक्षकों पे किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों का एक नियमित ग्रुप भी न्यायदर्श के रूप में लिया गया। राजनैतिक सैद्धान्तिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सौंदर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन किया गया। परिणाम प्रकट करते हैं कि जो अगुजराती थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक

अध्ययनशील थे। जबकि ग्रामीण शहरी गुजराती शिक्षक लोग केन्द्रित थे। संघ सचेतक थे आर्थिक रूप से केन्द्रित और बहुत अधिक धार्मिक थे।

अत्रेय एवं जयशंकर (1989) शिक्षकों के मूल्य एवं कार्य संतुष्टि में निम्न, औसत एवं उच्च अध्यापन प्रभावशीलता का चयन किया है।

उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों का निम्न औसत एवं उच्च परिणामकारक अध्यापन के लिये मूल्यों एवं कार्य संतुष्टि से संबंध का अध्ययन करना था।

इस कार्य के लिये मेरठ विश्वविद्यालय के 600 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रो. गिलानी द्वारा प्रमाणित मूल्यों का अध्ययन प्रश्नावली और कुमार एवं माथुर की शिक्षक कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इसका निष्कर्ष यह आया कि अध्यापन प्रभावशीलता अंशतः कोटि पर तथा कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। अध्यापन प्रभावशीलता सामान्य रूप से पायी गई।

तृतीय-अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय–तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना –

समस्याओं के निराकरण में वैज्ञानिक विधि को अपनाने का नाम ही अनुसंधान है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जॉच करना, निरीक्षण करना, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यायाम परीक्षण और तत्परतायुक्त उद्देश्य, सामान्यीकरण की प्रक्रिया है। शोध प्रविधि किसी भी शोध कार्य में यह संभव नहीं हो पाता कि सभी लक्ष्यगत समष्टि को अध्ययन के शामिल किया जाये। अनुसंधान का मुख्य कार्य अपने क्षेत्र की विषय सामग्री में सुधार लाना है, चाहे वह औषधि विज्ञान का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो अतः इसे ज्ञान के रूप में नहीं वरन् मानवीय क्रियाओं के रूप में समझा जाना चाहिए अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाये क्योंकि यह अभिकल्प ही शोधकर्ता को निश्चित दिशा प्रदान करता है। इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। न्यादर्श जितने अधिक सुदृढ होगें, शोध के परिणाम भी उतने ही विश्वसनीय परिशुद्ध होगें। न्यादर्श के चयन के पश्चात् उपकरणों एवं तकनीकी का चयन भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात एक उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या पर निष्कर्ष निकाला जाता है। तब कही जाकर एक शोध कार्य पूर्ण हो पाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अतः इस कार्य हेतु सर्वेक्षण प्रणाली का चयन मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल जिले के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करने के लिये किया गया है।

3.2 न्यादर्श एवं उसका चयन –

जब किसी जनसंख्या (इकाई या मनुष्य का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिये उसकी कुछ इकाईयों को चुन लिया जाता है। तथा चुनी हुई, इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा न्यायदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। इसके लिये म.प्र. राज्य के भोपाल जिले के नरेला विधानसभा क्षेत्र से 10 उच्च प्राथमिक विद्यालय जो अशोकागार्डन एवं गोविंदपुरा में स्थित है। उनको चुना गया है। शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् ऐसे शिक्षक जो नियमित है उनको न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

चयनित विद्यालयों में कुल 100 शिक्षक कार्यरत् थे। 100 शिक्षकों में से यादृच्छिक विधि का उपयोग करते हुये उनमें से 60 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। इन 60 शिक्षकों में महिला शिक्षक व पुरूष शिक्षक दोनों ही शामिल है। इस प्रकार न्यादर्श का विवरण निम्न सारणी में है।

तालिका क्रमांक 3.2

न्यादर्श का प्रारूप

विद्यालय का नाम	शिक्षकों की संख्या	चयनित शिक्षक	शिक्षक		कुल
			म.	पु.	
1. शा.उ.प्रा. शाला हिनौतिया भोपाल	4	1	–	1	1
2. शा.उ.प्रा. शाला फरहत अब्जा भोपाल	20	14	13	1	14
3. शा.क.उ.प्रा. शाला बरखेड़ी	6	3	2	1	3
4. शा.बा.उ.प्रा. शाला रशीदिया	10	4	4	–	4
5. शा.क.उ.प्रा. शाला हबीबिया	10	7	6	1	7
6. शा.बा.उ.प्रा. शाला हबीबिया स्टेशन क्षेत्र	10	7	7	–	7
7. शा.उ.प्रा.शा. लक्ष्मी मंडी अशोका गार्डन	10	6	6	–	6
8. शा.उ.प्रा.शा.बिजली नगर	10	8	5	3	8
9. शा.मा.गांधी उ.प्रा.शा. बरखेड़ा	10	4	4	–	4
10. शा.उ.प्रा.शा.टी.आर.टी. सुभाष नगर	10	6	5	1	6
कुल	**100**	**60**	**52**	**8**	**60**

3.3 शोध में प्रयुक्त चर –

प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न पृष्ठ भूमि के **''उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन''** के अंतर्गत निम्नलिखित चरों का अध्ययन किया गया है। शैक्षिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत शिक्षकों की प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण/शहरी, शैक्षिक योग्यता शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित, शिक्षण अनुभव 5 वर्ष व 5 वर्ष से अधिक को शामिल किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त चर

- ❖ **शैक्षिक मूल्य**
- ❖ **शैक्षिक योग्यता**
- ❖ **शैक्षिक अनुभव**

3.4 शोध अभिकल्प –

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की प्रविधि का प्रयोग किया गया। जिसके अंतर्गत शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का उनकी पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षिक मूल्यों की तुलना की गई है।

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोध की सफलता उसके तथ्यों के एकत्रित करने हेतु चुने गये उपकरणों पर निर्भर करती है। उपरोक्त नियम को ध्यान में रखते हुये शैक्षिक मूल्य से संबंधित आँकड़ों के संग्रहण हेतु शोधकर्ता ने शैक्षिक मूल्य परिसूची का निर्माण एवं विकास किया एवं शिक्षकों की पृष्ठभूमि ज्ञात करने के लिये एक प्रश्नावली को तैयार किया गया। उपलब्ध मूल परिसूचियों में मूल्य रूप से शिक्षक के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जबकि हमें शैक्षिक मूल्य परिसूची उपकरण की आवश्यकता थी जो बना हुआ नहीं था स्वनिर्मित परिसूची को एस. पी. कुल श्रेष्ठ एवं अहलूवालिया की शिक्षक मूल्य परिसूची को आधार बनाया गया। शैक्षिक मूल्य परिसूची को पाँच भागों में बाँटा गया। जो निम्न प्रकार है। (1) शैक्षिक प्रतिबद्धता (2) शिक्षण क्षमता (3) व्यवहारिक क्षमता (4) शिक्षण

कौशल (5) समस्या समाधान। शैक्षिक मूल्य परिसूची के प्रत्येक खण्ड के अंतर्गत 10-10 कथन का निर्माण किया गया। प्रत्येक कथन का उत्तर चार बिन्दु मापनी के अंतर्गत लिया गयाा इस प्रकार निर्मित शैक्षिक मूल्य परिसूची में 50 कथन शामिल किये गये। उपरोक्त परिसूची पर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में उपलब्ध विशेषज्ञों की राय एवं सुझाव लिये गये। इन सुझावों के अनुसार कुछ कथन की पुनरावृत्ति एवं अनावश्यक होने के कारण उन्हें निरस्त कर दिया गया। अतः शैक्षिक मूल्य परिसूची में अंतिम रूप से 40 कथनों का समावेश किया गया। प्रत्येक कथन में चार विकल्प हैं। प्रत्येक घटक में 8 कथन का समावेश है। इस परिसूची को शिक्षकों के छोटे समूह पर प्रयोग में लाया गया तथा विशेषज्ञों द्वारा सुझाव मांगे गये। उन सुझावों को अंतिम सूची में जोड़ा गया।

- **शैक्षिक मूल्य परिसूची उपकरण का निर्माण एवं प्रशासन -**

शैक्षिक मूल्य परिसूची (E.V.I.) स्वनिर्मित है। शैक्षिक मूल्य परिसूची में 40 कथन है। जिनको एस.पी. कुलश्रेष्ठ एवं अहलूवालिया की शिक्षक मूल्य परिसूची के आधार पर निर्माण किया गया है। प्रत्येक कथन के चार उत्तर है। जिसमें एक भी उत्तर सही या गलत नहीं है। उत्तरदाता को अपनी पहली प्राथमिकता दूसरी तथा तीसरी, चौथी प्राथमिकता दर्ज करनी है। इस परिसूची को हल करने में 60 मिनट का समय दिया गया है। इस प्रकार प्रत्येक घटक के आठ कथन लिये गये है। इन सभी मूल्यों का उच्च स्कोर 160 तथा निम्न स्कोर 40 होगा। ठीक इसी प्रकार घटक के आधार पर उच्च स्कोर 32 तथा निम्न स्कोर 8 होगा। उदाहरण के तौर पर उत्तरदाता से सभी 40 प्रश्नों को वांछनीयता के आधार पर प्रथम प्राथमिकता देने पर उसको चार अंक दिये जायेंगे। इस प्रकार शैक्षिक मूल्य के स्कोर 160 होंगे। इसी प्रकार अगर उत्तरदाता वांछनीयता के आधार पर द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ देता है तो इन मूल्यों के स्कोर निम्न होगे $3\times40=120$, $2\times40=80$, $1\times40=40$

3.6 प्रदत्तों का संग्रहण –

प्रदत्तों के संग्रहण हेतु शिक्षा विभागाध्यक्ष से एक अनुशंसा पत्र प्राप्त किया। उस पत्र की छायाप्रति लेकर शोधकर्ता विद्यालयों के विभिन्न प्रधानाध्यापक से मिला उन्हें आग्रहपूर्वक बताकर शिक्षकों से एकत्रित होने के लिये कहा शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कर उसके बाद दूसरे दिन समय लेकर उनसे स्वनिर्मित परिसूची भरने को कहा गया।

3.7 विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ –

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु संग्रहित प्रदत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात् दो समूहों की तुलना करने के लिये 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया।

चतुर्थ–अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना –

शोधकर्ता का मुख्य ध्येय समस्या के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालना होता है। ताकि महत्वपूर्ण निष्कर्षो के लिये प्रदत्तों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है। किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये आँकड़ों को एकत्रित करना होता है। जिससे अवलोकनकर्ता एक ही दृष्टि में सारणी को देखकर शोधकार्य के निष्कर्ष के बारे में अवगत हो जाता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जा सकें एवं चयनित उपकरणों के माध्यम से अध्ययन हेतु चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। तत्पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या इस अध्याय में की गयी सभी परिकल्पनाओं का परीक्षण उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का उपयोग करके किया गया। प्रत्येक परिकल्पना का अध्ययन भी कुल 3 परिकल्पनाओं तथा 15 उप परिकल्पनाओं के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

जे.एच.पाईनर के अनुसार– ''एक मकान का निर्माण पत्थरों से होता है। किन्तु पत्थरों के ढ़ेर से नहीं वरन् जटिल पत्थरों को सुव्यवस्थित रूप से होता है। वैज्ञानिक तथ्य का निर्माण भी तथ्यों के संकलन उपरान्त उचित विश्लेषण तथा व्याख्या द्वारा होता है।

पी.व्ही.युंग के अनुसार– ''संकलित तथ्यों के उचित संस्थिति सम्बन्धों के रूप में व्यवस्थित कर विचार पूर्ण आधारित शिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है। अर्थात विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष हैं।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों का प्रस्तुतीकरण–

प्रस्तुत शोध में विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषण उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है।

Ho परिकल्पना क्रमांक–1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्र. 4.1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों के मध्यमानों की तुलना।

परिवेश	संख्या (N)	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन (sd.)	मुक्तांश (df)	'टी'
शहरी	30	124.70	13.342	58	** 0.630
ग्रामीण	30	122.80	9.718		

** टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.1 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों की तुलना करने के लिय t का मान 0.630, है। df 58 के 0.05 स्तर पर t का मान 2.00 है। अतः शिक्षकों की प्रारंभिक शिक्षा से शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसलिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने का क्षेत्र ग्रामीण/शहरी के आधार पर शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

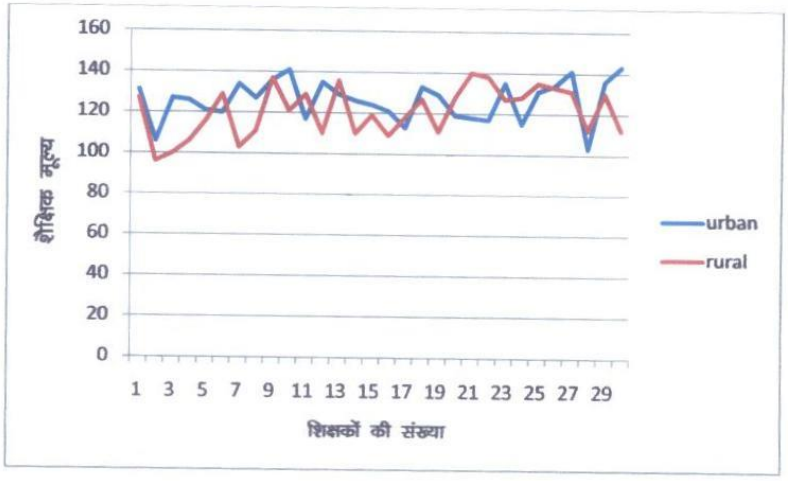

ग्राफ क. 4.1

ग्राफ क.4.1 में क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) के आधार पर शिक्षकों की संख्या एवं उनके शैक्षिक मूल्यों को दर्शाया गया है।

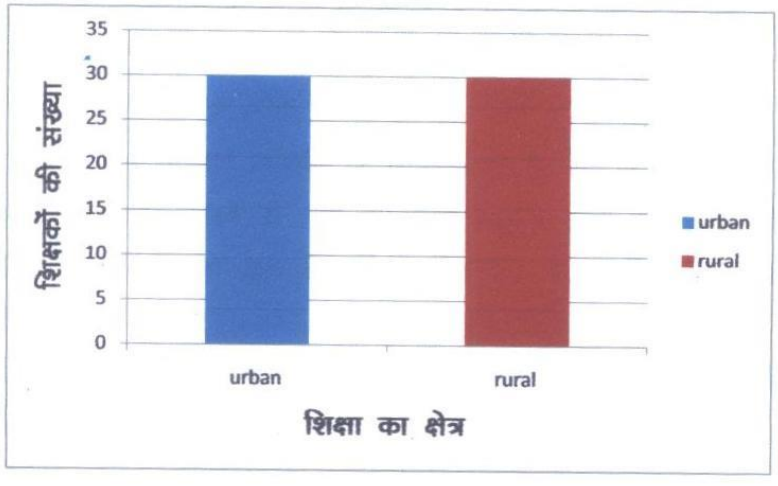

ग्राफ क. 4.2

ग्राफ क.4.2 में शिक्षकों की प्रारंभिक शिक्षा का क्षेत्र तथा शिक्षकों की संख्या को दर्शाया गया है।

Ho परिकल्पना क्रमांक–2

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता के आधार पर शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्र.–4.2

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों के मध्यमानों की तुलना ।

शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
शैक्षिक प्रशिक्षण सहित	39	1246.66	5.4	58	* 6.37
शैक्षिक प्रशिक्षण रहित	21	1110.0	3.9		

* टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक पाया गया।

तालिका क्र. 4.2 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि 'टी' का मान 6.37 है। अतः df 58 पर देखने से 'टी' का मान 0.05 स्तर पर 2.00 है। जो वास्तविक 'टी' के मान से कम है। जो सार्थक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

इस प्रकार शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में अंतर देखने को मिला है।

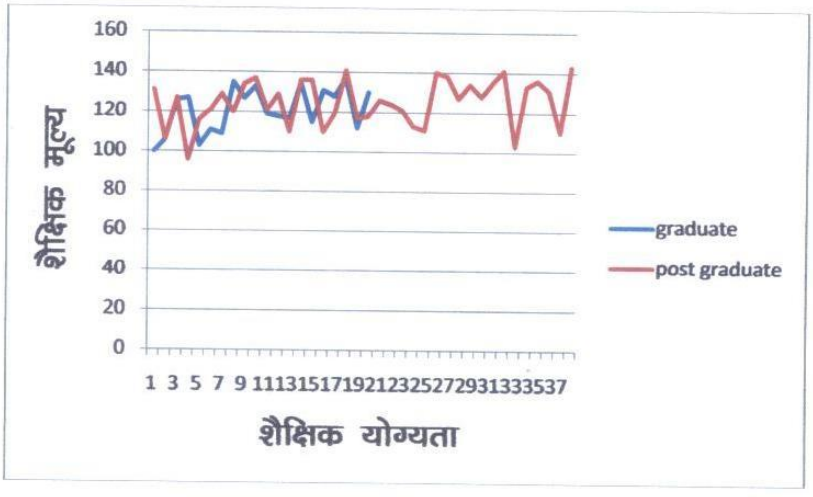

ग्राफ क. 4.3

ग्राफ क. 4.3 में शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता तथा शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों को दर्शाया गया है।

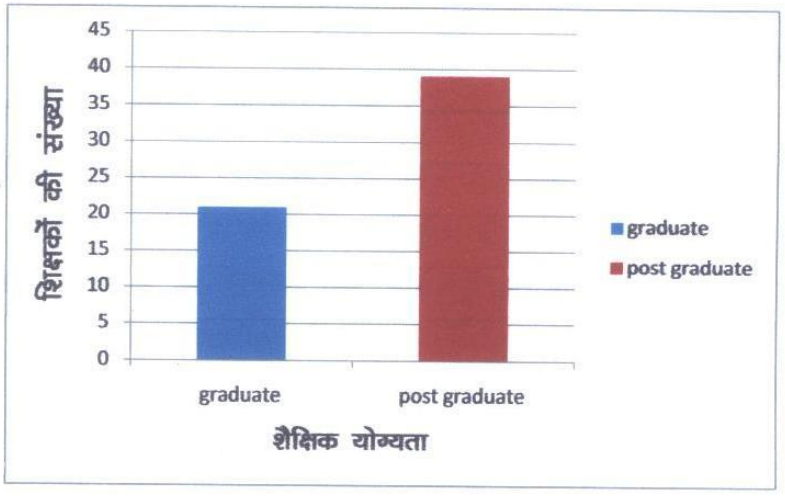

ग्राफ क. 4.4

ग्राफ क. 4.4 में शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता तथा शिक्षकों की संख्या को दर्शाया गया है।

Ho परिकल्पना क्रमांक–3

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्र.–4.3

पाँच वर्ष व उससे अधिक अनुभव के आधार पर शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक अनुभव	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	t. मूल्य
5 वर्ष से अधिक	35	123.942	12.678	58	** 0.242
5 वर्ष	25	123.200	8.641		

** टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.2 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि टी का मान 0.242 है जो 0.05 स्तर तथा df 58 के साथ सार्थक नहीं है। शिक्षकों का अध्यापन अनुभव 5 वर्ष के आधार पर 5 वर्ष पर t का मान = 0.242

df 58 पर 0.05 स्तर पर t का मान 2.00 है। जो 0.05 स्तर के टी. मूल्य से अधिक है इसलिए परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

इससे स्पष्ट है कि शिक्षकों का अध्यापन अनुभव के आधार पर शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

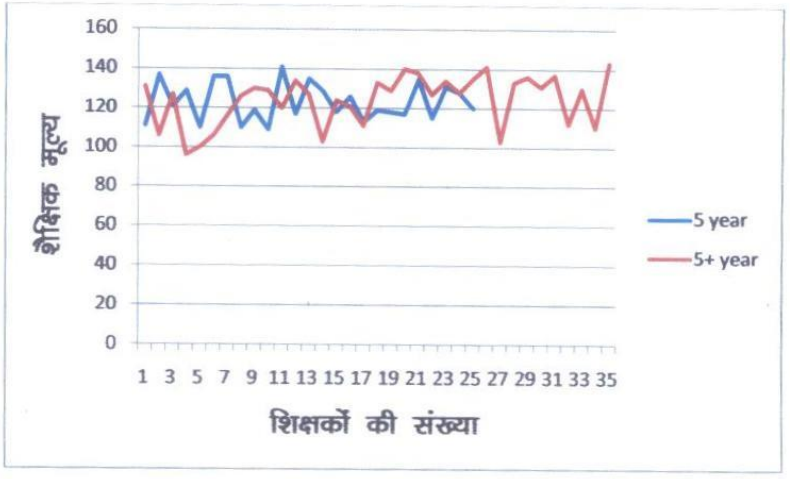

ग्राफ क. 4.5

ग्राफ क. 4.5 में अनुभव के आधार पर शिक्षकों की संख्या तथा उनके शैक्षिक मूल्यों को दर्शाया गया है।

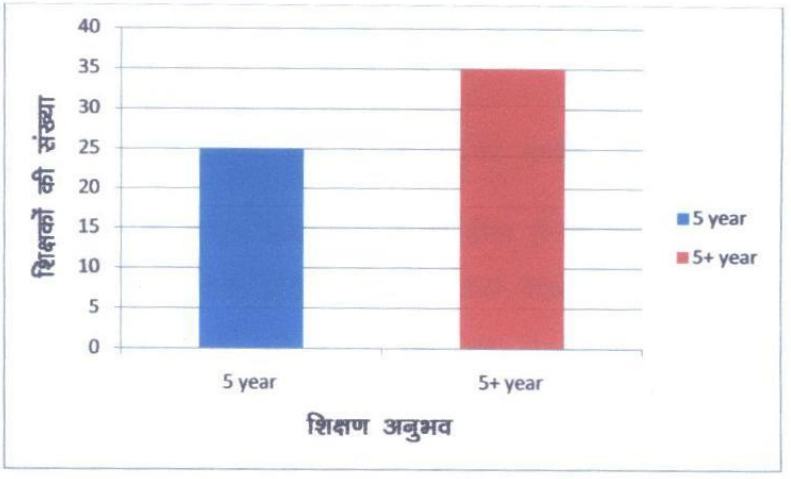

ग्राफ क. 4.6

ग्राफ क. 4.6 में शिक्षकों की संख्या तथा शैक्षिक अनुभव को दर्शाया गया है।

Ho 1.1 उपपरिकल्पना–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.4

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता के मध्यमानों की तुलना।

प्रारंभिक शिक्षा का क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
ग्रामीण	30	23.566	1.950	58	** 0.562
शहरी	30	23.166	2.793		

** टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.4 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता की तुलना करने के लिये 'टी' का मान 0.562 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है की उनके बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षा के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

Ho 1.2 उपपरिकल्पना–

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.5

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
शैक्षिक प्रशिक्षण सहित	41	23.850	2.740	58	* 2.081
शैक्षिक प्रशिक्षण रहित	19	22.310	2.318		

* टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक पाया गया।

तालिका क्र. 4.5 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है। शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों की तुलना के लिये टी का मान 2.081 है जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से कम है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है की उनके बीच कोई सार्थक अंतर है। शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता में सार्थक अंतर पाया जाता।

Ho 1.3 उपपरिकल्पना–

पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.6

पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक प्रतिबद्धता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
5 वर्ष से अधिक	35	23.714	2.783	58	** 1.056
5 वर्ष	25	22.881	3.204		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.6 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

पाँच वर्ष व पांच वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव की तुलना के लिये टी का मान 1.056 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः शैक्षिक अनुभव के आधार पर शिक्षकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.4 उपपरिकल्पना–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.7

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

प्रारंभिक शिक्षा का क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान	सार्थकता
ग्रामीण	30	25.133	3.981	58	0.481	**
शहरी	30	24.666	3.379			

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.7 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण एवं शहरी में शिक्षित शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आधार पर तुलना के लिये टी का मान 0.481 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः ग्रामीण एवं शहरी के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में क्षेत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.5 उपपरिकल्पना–

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.8

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
शैक्षिक प्रशिक्षण सहित	41	25.700	3.155	58	** 0.711
शैक्षिक प्रशिक्षण रहित	19	25.000	4.052		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.8 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता के आधार पर उनकी शिक्षण क्षमता की तुलना करने के लिये टी का मान 0.711 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शिक्षकों में शैक्षिक योग्यता के आधार पर शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शैक्षिक योग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.6 उपपरिकल्पना–

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका कमांक–4.9

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक अनुभव	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
पाँच वर्ष से अधिक	35	25.914	3.508	58	** 1.135
पाँच वर्ष से कम	25	24.881	3.290		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.9 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव के आधार पर उनकी शिक्षण क्षमता की तुलना करने के लिये टी का मान 1.135 है। जो df 58 पर 0. 05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव के आधार पर शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.7 उपपरिकल्पना–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका कमांक–4.10

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के व्यवहारिक क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

प्रारंभिक शिक्षा का क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
ग्रामीण	30	24.460	3.897	58	** 0.840
शहरी	30	25.400	4.530		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.10 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर उनकी व्यवहारिक क्षमता की तुलना करने के लिये टी का मान 0.840 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शिक्षा के क्षेत्र के आधार पर व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शिक्षा के क्षेत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.8 उपपरिकल्पना–

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.11

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
शैक्षिक प्रशिक्षण सहित	41	24.682	4.397	58	** 0.661
शैक्षिक प्रशिक्षण रहित	19	25.473	3.871		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.11 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता के आधार पर उनकी व्यवहारिक क्षमता की तुलना करने के लिये टी का मान 0.661 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शिक्षा की योग्यता के आधार पर व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शिक्षकों में शैक्षिक योग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.9 उपपरिकल्पना–

पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.12

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता के मध्यमानों की तुलना

शैक्षिक अनुभव	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
पाँच वर्ष से अधिक	35	24.628	4.276	58	** 0.507
पाँच वर्ष	25	25.200	4.156		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.12 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव के आधार पर उनकी व्यवहारिक क्षमता की तुलना करने के लिये टी का मान 0.507 है। जो df 58 पर 0. 05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शैक्षिक अनुभव के आधार पर व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.10 उपपरिकल्पना–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.13

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

प्रारंभिक शिक्षा का क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान	सार्थकता
ग्रामीण	30	23.6	3.312	58	0.117	**
शहरी	30	23.7	3.163			

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.13 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से शिक्षा प्राप्त के आधार पर उनकी शिक्षण कौशल की तुलना करने के लिये टी का मान 0.117 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शिक्षा का क्षेत्र के आधार पर शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शिक्षकों में शिक्षा का क्षेत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.11 उपपरिकल्पना–

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.14

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शिक्षण कौशल क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
शैक्षिक प्रशिक्षण सहित	41	23.487	3.335	58	** 0.561
शैक्षिक प्रशिक्षण रहित	19	24.00	2.99		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.14 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता के आधार पर उनकी शिक्षण कौशल की तुलना करने के लिये टी का मान 0.561 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शैक्षिक योग्यता के आधार पर शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शिक्षकों में शैक्षिक योग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.12 उपपरिकल्पना–

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय Regional Institute of Education, Bhopal Library

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका कमांक–4.15

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक अनुभव	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
पाँच वर्ष से अधिक	35	23.514	3.512	58	** 0.508
पाँच वर्ष	25	23.958	2.791		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.15 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव के आधार पर उनकी शिक्षण कौशल की तुलना करने के लिये टी का मान 0.508 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शैक्षिक अनुभव के आधार पर शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.13 उपपरिकल्पना–

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.16

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

प्रारंभिक शिक्षा का क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
ग्रामीण	30	26.500	4.047	58	** 0.349
शहरी	30	26.130	3.940		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.16 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से शिक्षा प्राप्त के आधार पर उनकी समस्या समाधान की तुलना करने के लिये टी का मान 0.117 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शिक्षा का क्षेत्र के आधार पर **समस्या समाधान** में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में समस्या समाधान का शिक्षा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.14 उपपरिकल्पना–

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक–4.17

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शिक्षण कौशल क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक योग्यता	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
शैक्षिक प्रशिक्षण सहित	41	26.097	3.992	58	** 0.570
शैक्षिक प्रशिक्षण रहित	19	26.736	3.918		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क्र. 4.17 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता के आधार पर उनकी समस्या समाधान की तुलना करने के लिये टी का मान 0.561 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शैक्षिक योग्यता के आधार पर समस्या समाधान में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में समस्या समाधान का शैक्षिक योग्यता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

Ho 1.15 उपपरिकल्पना–

पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका कमांक–4.18

पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता के मध्यमानों की तुलना।

शैक्षिक अनुभव	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मुक्तांश df	टी मान
पाँच वर्ष से अधिक	35	25.657	4.153	58	** 1.514
पाँच वर्ष	25	27.240	3.580		

* *टी का मान 0.05 लेवल ऑफ कॉन्फीडेंस पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका क. 4.18 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है।

पाँच वर्ष व पाँच वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव के आधार पर उनकी समस्या समाधान की तुलना करने के लिये टी का मान 1.514 है। जो df 58 पर 0.05 स्तर पर टी का मान 2.00 है। जो वास्तविक टी के मान से अधिक है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शैक्षिक अनुभव के आधार पर समस्या समाधान में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में समस्या समाधान का शैक्षिक अनुभव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

4.3 परिणामों की विवेचना

- प्रस्तुत शोध में अलग-अलग परिवेश, विविध कार्य, अनुभव तथा शिक्षण प्रशिक्षण सहित तथा प्रशिक्षण रहित पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन का प्रयास किया गया था। इसके अंतर्गत प्राप्त परिणाम ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।'' उक्त परिणाम पूर्व में किये गये शोध **श्रीवास्तव (1990)** ने शैक्षिक मूल्यों के द्वारा शिक्षकों को रूचि और कार्य संतुष्टि में बदलाव का अध्ययन किया। **काकुर (1981)** ने शिक्षकों के मूल्य का छात्रों पर असर का अध्ययन किया। **राघवेन्द्र (1964)** ने सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों में मूल्य प्राथमिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया, से मेल खाते हैं इसका प्रमुख कारण संभवतः शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों के विकास की प्रक्रिया है। ऐसा माना जाता है कि मूल्यों के विकास में व्यक्ति की योग्यता एवं अनुभव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। चूँकि शिक्षकों की उच्च प्रारंभिक शिक्षा का परिवेश ग्रामीण तथा शहरी था, परन्तु इस स्तर की शिक्षा को पूर्ण करने तक विद्यार्थियों की आयु 12 वर्ष से 14 वर्ष के बीच होती है और इस आयु तक मूल्यों का विकास होना दुविधापूर्ण है।

  उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक मूल्य ग्रामीण/शहरी, शैक्षिक अनुभव व योग्यता के आधार पर उनके शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

- शोध में प्राप्त परिणाम शैक्षिक मूल्य में ग्रामीण/शहरी शैक्षिक प्रशिक्षण सहित/रहित शिक्षक की परिपक्वता कक्षा 12वीं पास करने पर आती है तथा शिक्षक की सोच बदलती है व अनुभव के आधार पर सही/गलत की पहचान हो जाती है तथा उसके मूल्य के विकास की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। साथ ही व्यवसायिक प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षकों के शिक्षण के मूल्य पुष्ट हो जाते है।

पंचम–अध्याय

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन का सच्चा आधार नैतिकता तथा सच्चरित्रता ही है। इस प्रकार शैक्षिक मूल्यों में सदाचार ही शिक्षक के सफलता की कुंजी है। अतः शिक्षक अपना उद्देश्य पाने में सक्षम होने के लिये विद्यार्थियों का शैक्षिक अध्ययन जरूरी है। तथा उसका मूल्यांकन करना अति आवश्यक है। शिक्षक छात्रों में एक ऐसी छाप छोड़ जाते हैं, जिसके लिये वह सदैव विद्यार्थियों द्वारा उचित गौरव एवं सम्मान पाता है। और कालान्तर में भी स्मरण किया जाता है। गुरूजनों व आचार्य की समर्थ प्रेरणा से ही बालकों और शिष्यों का पथ प्रशस्त हो सकता है। नैतिकता रूपी पौधा विश्वास रूपी भूमि एवं श्रद्धारूपी सिंचन की मांग करता है। आज भी अनेक शिक्षक हैं जो समाज में विश्वास एवं श्रद्धा के पात्र हैं। और शिक्षकीय गौरव एवं आदर्श से विद्यार्थियों को समाज को निरन्तर लाभान्वित कर रहे हैं।

किसी देश की गुणवत्ता वहाँ के नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर है नागरिकों की गुणवत्ता बहुत कुछ शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है। स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के योगदान का सीधा संबंध सुयोग्य नागरिकता तथा राष्ट्र के विकास से है। वस्तुतः उच्च प्राथमिक शिक्षक एवं जीवन्त आदर्श तथा ज्ञानधारा का असज स्त्रोत है। शिक्षक ही छात्रों के सर्वांगीण विकास को सही दिशा प्रदान करता है अर्थात् उच्च प्राथमिक शिक्षक छात्र जीवन की विकास की नींव का पत्थर साबित होता है। नींव मजबूत होगी तो इमारत भी मजबूती से अपने स्थान पर अचल व अडिग खड़ी रहेगी।

उच्च प्राथमिक शिक्षक की शुरूआत छात्रों से सदगुणों का समावेश शिक्षा के द्वारा करता है। संक्षेप में शिक्षक मानवता का निर्माता व समाज का शिल्पी है। विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिये शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। यह तभी संभव होगा जब अध्यापकों में मूल्यों का विकास हो। मूल्य मनुष्य के अन्तरम में जाग्रत हुई शक्ति है। जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिये प्रेरित करती है और उसके आचरण को शांसित करती है। बच्चों के अंदर मूल्यों का सम्पूर्ण विकास हो यदि शैक्षिक मूल्यों का विकास हो जाये तो सभी मूल्यों को भी समझ सकते हैं।

अतः छात्रों में शैक्षिक स्तर को व उनके आदर्श मूल्यों के गिरते हुए स्तर को रोकने हेतु उच्च प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही परिवर्तन करना होगा। और इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उच्च प्राथमिक शिक्षक को ही निभानी है, इसलिये उच्च प्राथमिक शिक्षकों को अपनी शैक्षिक योग्यता को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखकर शिक्षा के सभी पक्ष व व्यवहारिकता सम्बन्धी ज्ञान छात्रों के समस्या का समाधान आदि का मार्ग प्रशस्त करना होगा। वो तभी अपने विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं, जब वो स्वयं शैक्षिक मूल्यों के प्रति उन्मुख हों।

5.2 समस्या कथन –

विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

5.3 शोध कार्य के उद्देश्य –

- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अनुमापन करना।

- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
- विभिन्न पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4 शोध कार्य की परिकल्पनाऐं –

Ho 1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 2. शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 3. 5 वर्ष व 5 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

उप–परिकल्पनाऐ :–

Ho 1.1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.2 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.3 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.4 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.5 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.6 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.7 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के व्यवहारिक क्षमता क में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.8 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.9 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.10 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.11 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.12 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.13 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.14 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.15 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

5.5 शोध में प्रयुक्त चर–

1. स्वतंत्र चर –प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण रहता है; उसे स्वतंत्र चर कहते हैं।

- ❖ शैक्षिक योग्यता
- ❖ शैक्षिक अनुभव

2. आश्रित चर – स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तित होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है, उसे आश्रित चर कहते हैं।

- ❖ शैक्षिक मूल्य

5.6 शोध का परिसीमन –

1. प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के नरेला विधानसभा क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल नियमित शिक्षकों तक सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल वे शिक्षकों का चयन होगा जिनको कम से कम 5 वर्ष या उससे अधिक का अनुभव है।

5.7 न्यादर्श एवं उसका चयन –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। जिसके लिये म.प्र. राज्य के भोपाल शहर के नरेला विधान सभा क्षेत्र के शासकीय उच्च प्राथमिक स्कूल में कार्यरत 100 शिक्षकों में से 60 शिक्षकों का चयन किया गया। शिक्षकों की प्रारम्भिक शिक्षा (ग्रामीण/शहरी) व शैक्षिक योग्यता स्नातक/परास्नातक एवं शैक्षिक अनुभव 5

वर्ष का या 5 वर्ष से अधिक के आधार पर उनके शैक्षिक मूल्यों को जानने के लिये उनका चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

5.8 शोध उपकरण –

शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करने के लिये शोधकर्ता ने स्वनिर्मित परिसूची का निर्माण किया जिसमें 40 कथन है जिनके उत्तर के चार विकल्प है। एस.पी अहलूवालिया व एस.पी.कुलश्रेष्ठ की शिक्ष कमूल परिसूची से ली गई है। शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों को जानने के लिये पॉच घटकों का प्रयोग किया है (1). शैक्षिक प्रतिबद्धता (2). शिक्षण क्षमता (3). शिक्षण कौशल (4). व्यवहारिक सक्षमता (5). समस्या समाधान इन सभी घटकों का मुख्य उद्देश्य है शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य जानना। प्रत्येक घटक में 8 प्रश्न लिये गये है।

5.9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु संग्रहित प्रदत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात् दो समूहों की तुलना करने के लिये 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया।

5.10 प्रदत्तों का विश्लेषण –

परिकल्पना क्रमांक	तालिका क्रमांक	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	निष्कर्ष
Ho 1.	4.1	t मान	0.630	सार्थक नहीं है
Ho 2.	4.2	t मान	6.370	सार्थक है।
Ho 3.	4.3	t मान	0.242	सार्थक नहीं है
Ho 1.1	4.4	t मान	0.562	सार्थक नहीं है
Ho 1.2	4.5	t मान	2.081	सार्थक है।

Ho 1.3	4.6	t मान	1.056	सार्थक नहीं है
Ho 1.4	4.7	t मान	0.481	सार्थक नहीं है
Ho 1.5	4.8	t मान	0.711	सार्थक नहीं है
Ho 1.6	4.9	t मान	1.135	सार्थक नहीं है
Ho 1.7	4.10	t मान	0.840	सार्थक नहीं है
Ho 1.8	4.11	t मान	0.661	सार्थक नहीं है
Ho 1.9	4.12	t मान	0.507	सार्थक नहीं है
Ho 1.10	4.13	t मान	0.117	सार्थक नहीं है
Ho 1.11	4.14	t मान	0.561	सार्थक नहीं है
Ho 1.12	4.15	t मान	0.508	सार्थक नहीं है
Ho 1.13	4.16	t मान	0.349	सार्थक नहीं है
Ho 1.14	4.17	t मान	0.570	सार्थक नहीं है
Ho 1.15	4.18	t मान	1.514	सार्थक नहीं है

5.11 शोध परिणाम –

शोधकर्ता द्वारा ऑकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात निम्न परिणाम प्राप्त हुये

1. प्रारम्भिक शिक्षा (ग्रामीण/शहरी) क्षेत्र में प्राप्त करने वाले उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।
2. स्नातक एवं परस्नातक शिक्षा प्राप्त करने वाले उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।
3. अध्यापन अनुभव 5 वर्ष व उससे अधिक वाले उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्षः

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणामों एवं उनकी विवेचना के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

1. उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन संबंधी परिवेश का उनके शैक्षिक मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं होता है। अर्थात् शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य उनकी शिक्षा प्राप्त करने के स्थान से स्वतंत्र होते है।
2. शिक्षकों का व्यवसायिक प्रशिक्षण शिक्षकों में शिक्षा संबंधी विभिन्न लक्षणों का निर्माण करने में सहायक होता है। उपरोक्त तथ्य प्रस्तुत अध्ययन प्राप्त परिणाम शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित को स्थापित करते पाये गये, जहाँ उच्च प्राथमिक स्तर के वे शिक्षक जिन्होंने व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था उनमें अधिक शैक्षिक मूल्य पाये गये। जबकि प्रशिक्षण रहित शिक्षकों में उच्च प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभाव था।
3. शिक्षकों के अनुभव के आधार पर वे शिक्षक जिनको पांच वर्ष का शैक्षिक अनुभव था उनमें शैक्षिक मूल्यों के प्रति कम जानकारी थी उसकी अपेक्षा पाँच वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव वाले शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूकता थी। अतः इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव का महत्व अवश्य ही होता है। जब कोई कार्य का अनुभव अधिक हो जाता है तो शिक्षा से संबंधित उनमें जागरूकता देखने को मिलती है। **राघवेन्द्र (1964)** ने सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों में मूल्य प्राथमिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया **आनंद (1980)** ने शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों व कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया है। **मिस्त्री (1988)** ने ग्रामीण, शहरी और निजी गुजराती कॉलेज और माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इन सभी संबंधित शोध में शिक्षकों की

योग्यता अनुभव व परिवेश के आधार पर शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन है। उस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षकों में अनुभव, योग्यता एवं परिवेश का शैक्षिक मूल्यों में फर्क पड़ता है।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव –

प्रस्तुत शोधकार्य के अनुसार भावी शोधकार्य हेतु कुछ समस्याऐं निम्न प्रकार की हो सकती है

- ❖ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- ❖ शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- ❖ उच्च प्राथमिक सतर के अध्यापकों को अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।
- ❖ शहरी, ग्रामीण एवं आदिवासी विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- ❖ उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अध्यापन, प्रभावशीलता व शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।
- ❖ प्राथमिक स्तर के छात्रों में शैक्षिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- ❖ छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि का उनके मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन।
- ❖ जिला शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) जैसी संस्थाओं के शिक्षकों में मूल्यपरक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

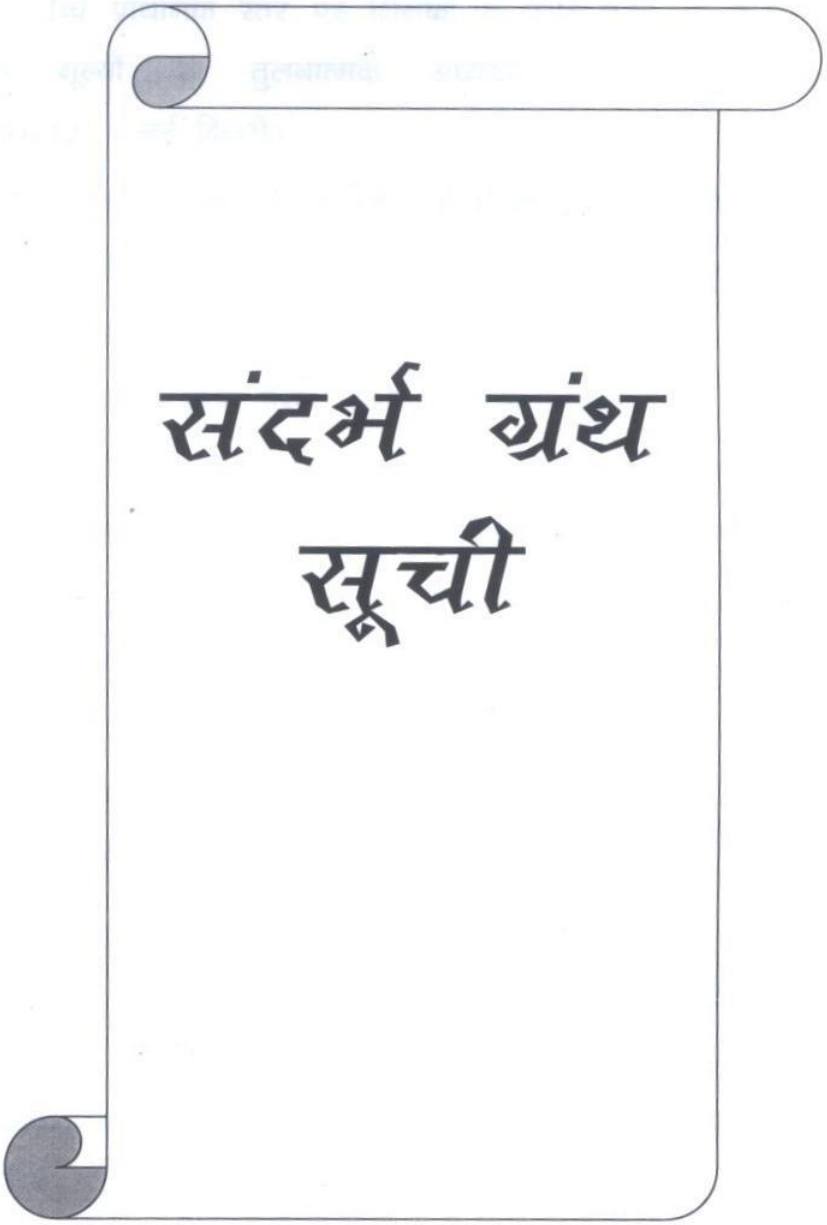

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अग्रवाल जे.सी. (1998) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, दिल्लीः प्रकाश प्रकाशन ।
- सिंह, एम. ''उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों व शिक्षिकाओं के नियंत्रण केन्द्र तथा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' प्राइमरी शिक्षक, 3;1 (जुलाई2002) : नई दिल्ली।
- शर्मा, एस.डी. (1999) शिक्षा के आयाम, नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन ।
- शर्मा, आर.ए. (2003) ''शिक्षा तथा मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन'' मेरठः इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- गुप्ता एन.एल. (1987) मूल्य परक शिक्षा, अजमेर : कृष्णा बदर्स ।
- चित्तौड़ा, राशि ''उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन'' प्राइमरी शिक्षक 28,.2 (अप्रैल2003):नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के.पी. (2003) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ : सूर्या प्रकाशन।
- पाठक, पी.डी. (1977) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ आगराः विनोद पुस्तक मंदिर ।
- माथुर, एस.एस. (1988) शिक्षा मनोविज्ञान आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।
- उपाध्याय, प्रतिभा (2007) ''भारतीय शिक्षा में उदीयमन प्रवृतियाँ'' इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन ।
- कपिल, एच.के. (1999) ''अनुसंधान की विधियाँ'' आगरा हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन।
- जोशी, धनंजय ''विद्यालयों में नैतिक मूल्यों का स्वरूप'' प्राइमरी शिक्षक 29;3 अप्रेल (2003)।
- पंत, निम्मी ''विज्ञान द्वारा मूल्यों का शिक्षण'' भारतीय आधुनिक शिक्षा 30;4 (जुलाई तथा अक्टूबर 2007)।

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) नई दिल्ली :एन.सी.ई.आर.टी.।
- अग्रहरि, गुप्त, नत्थूलाल (1986) मूल्य परक शिक्षा और समाज नई दिल्ली : नमन प्रकाशन।
- कालिका, चमोला ''मूल्य अर्थ तथा अवधारणा'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. 3; 2 (अप्रेल 2004)
- गैरिट, ई. हेनरी (1978) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।
- Singh D.P. (2001) Value education through work experience and vocational education 1;1 PP.114-119.
- Dave, R.H. (1999) Towards effective teacher education Ahmedabad: Gujrat Vidhyapith.
- N. Sandhya, N. venkataiah. Research in value education ; New delhi : S.B. Nangia, APH Publishing corporation 2002.

परिशिष्ट

व्यक्तिगत जानकारी

:: निम्न कथन में दो विकल्प दिये गये हैं। जिसमें सही विकल्प पर सही का निशान लगायें।

1. निम्न में से आपकी शैक्षिक योग्यता क्या हैं -

क. शैक्षिक प्रशिक्षण सहित

ख. शैक्षिक प्रशिक्षण रहित

2. निम्न में से आपकी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने का क्षेत्र

क. ग्रामीण

D- 422

ख. शहरी

3. निम्न में से आपको कितने वर्ष का शिक्षण/अध्यापन अनुभव हैं

क. 5 वर्ष

ख. 5 वर्ष से अधिक

शैक्षिक मूल्य परिसूची

नाम.

शैक्षिक योग्यता.

अध्यापन अनुभव.

विद्यालय का नाम.

आयु.

लिंग.

निर्देश--

शैक्षिक मूल्य परिसूची में 40 कथन है। प्रत्येक कथन में 4 विकल्प दिये गये हैं, जिसमें एक भी विकल्प सही गलत नहीं है। आप को अपनी प्राथमिकता के आधार पर जो आपको अधिक पसंद हो उसमें पहली प्राथमिकता में 1, उससे कम पसंद को दूसरी प्राथमिकता में 2 ठीक इसी प्रकार तीसरी व चौथी प्राथमिकता में 3 व 4 लिखना है। आपको एक अलग से उत्तर सीट दी गई है, उसमें प्राथमिकता दर्ज करनी है। आपको पूर्ण ईमानदारी के साथ उत्तर देना है। शैक्षिक मूल्य परिसूची को हल करने के लिए आपको 60 मिनट का समय दिया गया है।

1. शिक्षण व्यवसाय के प्रति आप किस प्रकार का भाव रखते हैं –

(अ) समर्पण (ब). जवाबदेही

(स) निष्ठा (द). शिष्टाचार

2. आप अध्यापक को किस प्रकार देखते हैं।

(अ) निरंतर सीखने वाला (ब). जिज्ञासु

(स) सदैव शिक्षण हेतु तत्पर (द). अजीवन ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा

3. शिक्षक में निम्न में से कौन से गुण होने चाहिये।

(अ) ईमानदार (ब). कार्य के प्रति समर्पित

(स) जवाबदेह (द). निष्ठावान

4. एक शिक्षक को सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

(अ) ज्ञान के प्रति (ब). जिज्ञासा के प्रति

(स) उदारता के प्रति (द). अपने कार्य के प्रति

5. शिक्षक होने के नाते आप की राय में अध्यापन एक आदर्श व्यवसाय है।

(अ) रूचिकर (ब). सम्मानजनक

(स) छात्रों का शिक्षक के प्रति सम्मान (द). शिष्टाचार

6. आप के विचार अनुसार कौन सा कार्य शिक्षक के लिये महत्वपूर्ण है।

(अ) कक्षा में समय से जाना (ब). बच्चों के साथ सहभागिता

(स). अनुशासन (द). छात्रों को उत्साहित करना।

7. अध्यापन व्यवसाय मानव सेवा का एक माध्यम है।

(अ) मानव सेवा की भावना जागृत होती है। (ब). इससे छात्रों में चारित्रिक विकास होता है।

(स). समाज का विकास होता है। (द). भाई-चारे की भावना जागृत होती है।

8. शिक्षक होने के नाते अध्यापन व्यवसाय के लिये जरूरी है।

(अ) परिश्रम (ब). प्रशिक्षण

(स). ज्ञान होना (द). जिज्ञासु

9. शिक्षक की दृष्टि से शिक्षण क्षेत्र का कार्य अधिक श्रेष्ठ है।

(अ) दूसरी नौकरी का न मिलना (ब). स्वयं का ज्ञान प्राप्त होना है

(स). समाज में शिक्षक का सम्मान (द). और भी कार्य करने का समय मिल जाता है।

10. आप निम्नलिखित में से किसे सर्वोत्तम शिक्षक मानेगें ?

(अ) जो कक्षा में कड़ा अनुशासन रखता हो। (ब). जो मनोरंजक कहानियां सुनाता हो

(स). जो छात्रों में अन्तःक्रिया को प्रात्साहित करता है (द). जो लगतार व्याख्यान देता हो।

11. आप किस शिक्षक को सफल शिक्षक मानते हैं।

(अ) कड़ा अनुशासन रखता हो। (ब). नियमित गृहकार्य देता हो।

(स). अच्छे अंक देता हो। (द). छात्रों की प्रगति में रूचि रखता हो।

12. एक प्रभावी अध्यापक को होना चाहिए –

(अ) अपने विषय में पूर्ण सक्षम (ब). शाला व्यवस्था में सक्षम

(स). खेल तथा साहित्य में सक्षम (द). अनुशासन बनाने में सक्षम

13. विद्यार्थियों को प्रदान किया गया शिक्षण प्रभावी हो सकता है।

(अ) अध्यापक की विषय में रूचि (ब). बालकों के मानसिक स्तर के अनुरूप शिक्षण

(स). बालकों का शारीरिक स्तर (द). एक ही विषय वस्तु को दोहराना।

14. आपने अध्यापन व्यवसाय ही क्यों अपनाया ?

(अ) आप के अभिभावक चाहते है। (ब). आपके मित्र के कहने पर

(स). आपके परिवार में कोई और शिक्षक नहीं (द). आपको इसमें रूचि है

15. एक शिक्षक अपनी कक्षा–कक्ष की परिस्थिति को आकर्षक बनाने के लिए करता है।

(अ) विषय वस्तु को उदाहरण के साथ समझाना (ब). कक्षा में अनुशासन बनाना।

(स). बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाना (द). उचित समाधान व मार्गदर्शन देना।

16. विद्यालय में शिक्षक का प्रमुख कार्य होता है ?

(अ) शिक्षक कार्य आयोजित करना (ब). विद्यार्थियों की देखरेख करना।

(स). अपना कार्य समय से करना (द). अन्य कार्यो में भाग लेना

17. शिक्षक की विद्यालय में तथा विद्यालय के बार आदर्श जीवन बिताना चाहिए क्योंकि –

(अ) समाज में मान–मर्यादा होने के कारण

(ब). समाज उसे मान्यता नहीं देगा

(स). वह गुरू कहलवाने का हकदार है

(द). समाज उसे मान्यता नहीं देगा।

18. जब कोई छात्र आप्रसांगिक प्रश्न पूछता है तो आप क्या करेंगे ?

(अ) उस को गृहकार्य देंगे

(ब). उसकी गलती का आभास कराऐंगे

(स). उसकी अवहेलना करेंगे

(द). उसको अन्य अवसर देंगे

19. शिक्षक छात्रों के लिए आदर्श होता है क्योंकि

(अ) वह विद्वान होता है।

(ब). उसमें छात्रहित सर्वोपरि होता है।

(स). वह समाज का आदर्श होता है

(द). वह उचित वातावरण प्रदान करता है।

20. जिस दिन विद्यालय की छुट्टी होती है तब आप क्या करते है।

(अ) खुब सोते है

(ब). मित्रों से मिलते है

(स). घुमने जाते है

(द). समाज के लिए कार्य करते है।

21. समाज सुधार में आपके अनुसार सर्वाधिक योगदान होना चाहिए।

(अ) समाज सुधारक का

(ब). राजनीतिज्ञ का

(स). शिक्षक का

(द). धर्मगुरूओं का

22. विद्यालयों में कक्षा शिक्षक की मुख्य जिम्मेदारी होती है।

(अ) विद्यार्थियों के स्वास्थ के बारे में

(ब). विद्यार्थियों से शुल्क लेना

(स). विद्यार्थियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करना

(द). अनुशासन बनाए रखना।

23. छात्रों के प्रति आप अपना व्यवहार कैसा रखेंगे।

(अ) एक तानाशाह जैसा

(ब). शिक्षक जैसा

(स). सामान्य

(द). मित्रतापूर्ण

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

24. शिक्षक को छात्रों में भय (डर) की भावना पैदा करनी चाहिए।

(अ) भय के बिना अनुशासन असंभव है।

(ब). छोटे बच्चे समझाने से काबू में नहीं आते।

(स). विकास रुक जाता है।

(द). इनकी शिकायत वे अपने माँ–बात से करेंगे।

25. यदि विद्यार्थी पढ़ने में रूचि न लेते हो तो शिक्षक को चाहिए कि –

(अ) शिक्षण विधि बदल दें

(ब). दृश्य–श्रृव्य सामग्री को प्रयोग में लाकर पाठ को रूचिकर बनायें।

(स). कक्षा में कोई अन्य कार्य प्रारंभ करें

(द). अपने कलात्मक कौशल का।

26. अध्यापक के लिए आवश्यक हैं –

(अ) विषय का पूरा ज्ञान

(ब). शिक्षण विधियों का ज्ञान

(स). शिक्षण सूत्रों का ज्ञान

(द). पाठ की शुरूआत पूर्ण ज्ञान से करें।

27. अध्यापक अपने विषय में पूर्ण रूप से सक्षम होना चाहिए। क्योंकि

(अ) आत्म विश्वास बना रहता है

(ब). प्रभावी तरीके से अनुशासन बनाये रखना।

(स). शिक्षण कार्य में सहायता मिलती है।

(द). छात्रों के द्वारा प्रश्न पूछने पर उत्तर देने में सहायता मिलती है।

28. अध्यापक होने के नाते आप श्यामपट्ट कार्य को अधिक प्रभावशाली व आर्कषण बनाने हेतु क्या करेंगे –

(अ) शिक्षक स्वयं श्यामपट्ट कार्य करें

(ब). छात्र जिसका लेख अच्छा हो उसका उदाहरण देकर।

(स). सभी छात्रों को समय अनुसार श्यामपट्ट पर कार्य कराके।

(द). अच्छे लेख तथा श्यामपट्ट कार्य के महत्व पर भाषण देकर।

Regional Institute of Education, Bhopal Library

29. कक्षा में अध्यापक के रूप में आप प्रश्न पूछते है –

(अ) अनुशासन बनाये रखने के लिए (ब). अपना शिक्षण उत्तर करने के लिए

(स). छात्रों को व्यस्त रखने के लिए (द). विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए।

30. कक्षा में पाठ आरम्भ करने से पहले यह कर लेना उचित है–

(अ) पिछले पाठ के प्रश्न पूछ ले (ब). पूर्व ज्ञान के अनुसार प्रश्न पूछे

(स). कक्षा में सीधे नया पाठ शुरू करें (द). छात्रों से पूछकर आगे बढ़े।

31. अध्यापक होने के नाते आप किसी विधि को अधिक लाभप्रद मानते हैं –

(अ) भाषण विधि (ब). करके सीखने की विधि

(स). प्रदर्शन विधि (द). वार्तालाप विधि

32. आप छात्रों में सूक्ष्म शिक्षण के महत्व को कैसे पैदा करेंगे।

(अ) सूक्ष्म शिक्षण पर भाषण देकर (ब). छात्रों को उस विधि से पढ़ाकर

(स). प्रशिक्षण में स्वयं छात्र शिक्षण सूक्ष्म विधि से शिक्षण दे। (द). सूक्ष्म शिक्षण में छोटी कहानी सुनाकर

33. अध्यापक को शिक्षण बिन्दु बनाने चाहिए।

(अ) इससे यह जाने में सहायता मिलती है कि क्या पढ़ाना है। (ब). इससे समय की बचत होती है

(स). अनुशासन बनाये रखने में सहायता मिलती है। (द). शिक्षण कार्य अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

34. आपकी आवाज तेज नही है कक्षा में पढ़ाने में कठिनाई होती है, तब आप क्या करेंगे –

(अ) यथावत बोलते रहेंगे। (ब). छात्रों के नजदीक जाकर पढ़ायेगें।

(स). खूब जोर से बोलेंगे (द). शरीर को अधिक कष्ट नहीं देगे।

35. कक्षा शिक्षण में विद्यार्थी तब तक ध्यान केन्द्रित नहीं करेंगे जब तक –

(अ) उनमें जिज्ञासा पैदा नहीं की जायेगी (ब). उनमें कड़ा अनुशासन नहीं होगा।

(स). उनसे प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे। (द). श्यामपट का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

36. यदि कुछ विद्यार्थी आपस में झगड़ते हैं तो शिक्षक के रूप में आप –

(अ) अधिक शक्तिशाली छात्रों का साथ देगें।

(ब). जो कम शक्तिशाली हो उसका साथ देगें।

(स). कोई ध्यान नहीं देगें।

(द). उन दोनों समूहों में मित्रता करवा देगें।

37. छात्रों को प्रश्न के उत्तर खोजने के लिए अध्यापक क्या निर्देश दे –

(अ) पुस्तकालय में जाकर उत्तर तलाश करें

(ब). प्रश्नों के उत्तर शिक्षक से पूछे।

(स). प्रश्नों के उत्तर स्वयं बतायें।

(द). प्रश्नों के उत्तर पाठ्य पुस्तक से खोजें।

38. अध्यापक–समाज का मार्गदर्शक है इस कारण उसे सजग रहने की आवश्यकता है।

(अ) सामाजिक आडंबरों के प्रति

(ब). समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के प्रति।

(स). समाज की स्त्रियों के प्रति

(द). समाज की आर्थिक उन्नति के प्रति।

39. शिक्षकों में अनुशासन रखने हेतु आप सुझाव देंगे।

(अ) अनुशासन के महत्व से अवगत करायेंगे।

(ब). स्वयं अनुशासित रहेंगे।

(स). उदाहरण प्रस्तुत करेंगें।

(द). अन्य सुझाव देंगें।

40. आप एक शिक्षक के नाते छात्रों को प्रभावित करने के लिए क्या करेंगे।

(अ) छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं पर ध्यान देंगे।

(ब). जवाबदेही

(स). सूक्ष्म शिक्षण देंगें।

(द). मार्गदर्शन देंगे।

Q– 422

ीय शिक्षा संस्थान
ैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)
ामला हिल्स, भोपाल – 462013

Regional Institute of Education
(National Council of Educational Research & Training)
Shyamla Hills, Bhopal - 462013

Dt. 10.1.2014.

To Whom So Ever It May Concern

The bearer of the letter, Ms/Mr Rajkumar. is bonafide student of Regional Institute of Education, Bhopal, who is pursuing M.Ed. degree. As part of the course work he/she is conducting research on. " विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन। " for dissertation work. In this connection, he/she is visiting your School/Institute for Data collection.

Therefore, you are requested to allow the researcher and extend co-operation in collecting the data.

The data collected will be kept confidential and will be used only for research purpose.

Thanking you in anticipation.

With regards,

विभागाध्यक्ष / Head
विभाग / Department of Education
Yours Sincerely
Dr. Ramesh Babu B.
Head,
Department of Education
Regional Institute of Education
Shymla Hill, Bhopal